

वाजाए वक्तु धर्मिस्तौ मन्त्रिनी निगिचापिनः सर्वता को सुवृष्टौ ए वक्तु धर्म साधिनः ॥ मा हस्त शिष्टा वा वा भक्ति युक्तं न ज्ञात
 धाम । गेना सो सर्वमाणाः माणा गते न जागेः वातकस्य ज्ञासे पात्रयग ॥ एव ध्वसंसाया वाजाधयापि निमन्त्रिधयापि नि । नीगिचत
 या नासापि नीदया चोकरुत सा सुद्वरुया रिगुवा पात्रयाया । धर्म सैरु सा चोठः मा । ग्व व असे आकजनः इत्यव न्द्रापयिं सुमैरुय
 मा । गग कि पुमानं ज्ञात धाम पात्रयाया । हे अयत्र मा नाधक नाम रूचो प्र दिदि अणि संपूर्ण गग धनमाणा क मा मया र्ग र्ग नः
 पिनाग । दिदि अणि मचाप ग नावितः क न हस्त सः धवात्र क या जीवशा न व्याकः क न हस्त समद्वयाधकः धनी या निर्मि डि जि
 स्पेने ज्ञायाय मात ॥ गग ४ अहा इध्व्यैरु मात्रं भो वाचुदाम निधात्रय ॥ धृगु धो हायर ध्वगधः जतु वृणाम नीरु प्र ॥ दिद्य सु व
 लू जतु श्री मन्त्रिगं सम आचग वहि श्रयो चापिकापित स्प समनग ॥ धृज रु मात्र अकन वान नाक दिद्य सुवर्ण जतु या ग जरा

तसाजाकथमानेपिहाभवाथमकूमात्रपाशुगेजपोचात्रधयाशुभेगसःकापितनगवसथगेवैभनं॥श्रीसमृद्धिपुसत्रानि
वहवृक्षगुसर्वग४७वगदामहानन्दसूत्वधर्मगन्धर्गः।सर्वसत्त्वमनाज्ञादिमहासाहपुवर्द्धग॥धययाकमनंश्रीसातनं
पुसत्रशुसकएनचकनाभिशुवचनरुतवत्रस्यात्रसमहाभानन्दरुयासूत्वधर्मधूगुपकापत्रकूरुन्याभसंसात्रयोकस
कस्याभिमयूरुयामहाउत्साहूरुयाभचोन॥७गगुपकुनसंपूर्णकूमात्रपयिवर्जितसकेग॥विदभजार्जुनदर्शनार्ह॥उगु
वषगुपकुनसेरुकेपूर्णेरुयाचोभजा।इकूमात्रजागात्रगेगुडिजिस्थनमरुथधिमकूमात्रजामयना॥७गगुकूमात्रकाद
भागमहापागकपिणयए।नृपगिवचनेपयिवर्जितनमहाधर्म॥किंकात्रलनसर्वजकुनसंनसंपूर्ण॥७गत्यकात्रेन
महागुपकुम॥धुप्रियानिगिथवाजकूमात्रगागजामहापागकरुगुधूमनृपगिगागायागुहकमगात्रगेमधूगागान

महाधर्ममेवायु चक्रावलीयानिगिधः साः सकवयज्जलसंरुकरुयाचायानिगिधः पूगुप्रकावेकमापययानिगिधः जिस्वनयायमा
च॥ गग॥ सुधर्मीवगिवातत्वादिगियकेवर्कस्थानेगमनयगमहागुफयग॥ उगुवषगु सुधर्मीवगिवालीगः जाउक
मातग विदेसगागनंरभेवसुंमदुधनिम्र केवर्क व्याधयाउ सुवा नायनाग महागुफयानागव॥ उग हिजंकेवर्कस्य
पत्तिपूगीजन्मजाजास्थानेहृद्धा॥ धर्तुद्रुदिदिअजिमाः मंकिनिम्रसियासमधानयागरकेवर्क व्याधयापत्तिधयाप्रकना
प्रायमवा जाजायाधनः सयनाकेने॥ उवमस्तु सुधर्मीवगिपूगीजन्मनिश्चयः मंकिअपयमागसंवादयनहृद्धा॥ पूगु
युकायमकिनेविगियाग। गधविगियागनाधसा। हेमहावाजसुधर्मीवगिवातियाकेः जन्मरुणः पूगिधः निश्चयधाय
आग। जिगुवचनसअसृष्टाककं च॥ दिदिअजिमाउ। पहिगगे समधाननयाना। जाजायागकेने॥ गग॥ वाजंहृद्धाअस
रूपपूअहिगवचनसेवीर्कः ममपूअहिगनहविष्यगिग॥ उगुवषगु जाजा वासायाः असृष्टयानाः धपूअहिगअय

एषा याना जाजानेधन। धनपि। जिपूआहिगं॥ मत्वधकधाज॥ ॐ गिगनदिगं गुत्वाः पूआहिगं साक संगापय॥ ॥ यथधकधा
गुत्वठनाः पूआहिगन साक संगापकया धनाकया चान॥ गग॥ ॐ माज केवर्ह सागृह नाजय। कुभनगुपुपुपुपूर्वच नुपुमा
र्षसर्वसिद्धि॥ ॐ गुवषगु धनकवितकूमातरुतसो केवर्ह व्याध्याकुस वासयाना के धंध गुपुपुपुपूर्वच नुपुमा ध
ग्रामानंरुपा सकलसिद्धरुत॥ कुभनवाधिसंम्राजसर्वसास्तुनिगिविद्या पूययैराजया कुमां पूर्वजन्म कृया कर्मसर्वसिद्धि
विद्याजायग॥ कथं धंध वाधिसंम्राजं पूअरुपा सकलसास्तुदयानिगिसंतु कनाविद्या ॐ त्वधंध गुपुपुपुपूर्वजन्मया कृया
कर्मयानागुसकलसिद्धिविद्यातिहांगेधेरुत॥ नागिसमयंदीपगे धधिउगत्युकात्रवर्षरंघये॥ गथनाधसा नागिसम
यमगगधेरुतः॥ सगधेरुतगेधंध पूगुपुप्रकारं गजदयागुप्रिच्छिकायह॥ ॐ गदिनः सर्वलोकं पयिचिन्नयः कविक
मातेनामपुण्याकथ॥ ॐ कृयादिन्यः दयाचाकलाकपनिस्यनं मनंराजपपन गथधसा धधकवितकूमालयाना धधकलाकपंचनं

सकस्यनेधाव॥ गगनकूमावदेआकजपृथिमार्गकीजानगजकृगपुषभयग॥ उगुवषगुधूमकविनकूमावननः देसरधमरपृथि
मार्गसक्रिजानमिगाभतत धूगुधानससोन॥ गगनगयेवागृहं हसि अग्धस्त्रानं सलगमनुपदेवगाधनकूठागवः ना
गस्त्रानं सर्वकूर्हि स्थापयत॥ उगुवषगु धूगुनगयः धूगुवावागृह धूगुहनात्वावधुधक हनं धधायसलगध देवगायागुध
नधकूदगयवधुगिर्धधक धूगुपुकासे धनगतस धासरनामकूनागविष्मगसपूर्वुदुर्हि दयाचोक धापनयानाचोन॥
चपूननृपगिमकि पूजाहिगं सर्वसेन्यपुमृत्वरावयकल्याना॥ संग्रामनिमिर्ह हसि अग्धयधपूजयगः कूमाववचर्नश्रुत्यास
वृत्ताकासमृपासृष्टरुचंकृजपयायन॥ हनधूमनृपगिधवागामं किधपूजाहिगधसिपाहिपुर्जागवर्दावधकलावनाकल्प
नायानाचोनकूपाणिगिधसाः संग्रामयायनिमिर्हिनं हसि अग्धयधदयकागः कवितकूमावयागुवचर्नठनासकतलोक
दयाचोक कूमावयागुगान्यधनकजतंसकतमूनाकदायानाभिगत॥ गगनसूत्रेनगमननेमिर्हि पूजाहिगनह॥ द्वाः
सनचिकयत॥ उगुवषगुसूत्रेनंरसागमनयानावकुनम्रपूजाहिगं धवागकूमावत्यनंमननंरावयव॥ अक्षोआ

अथ मम नगरा ॥ क संकाय नुक द्विगिय वर्ष मम चिगुष्टं नगवपुस्कानय ॥ अक्ष आश्वर्याध नक्षत्रिगुलारा जिनंरुसा
इशरदप्रिनिददगः जिगु चिर्दगुष्टया ना देश दस्थनक पुस्कानरुयागु गादगु ॥ गगु ४ नृपगिदू ४ दवन देश नक जग मने
वाज्र ननकू मावट्ट ॥ अथ वग्धं सूधर्मा वगि कू मा जे सर्वजगु लपूर्णः मो भौ कूणम निग्ध रिगं ॥ उगु ववगु वाजायाः इषने
देशागत ॥ हिगु हि वाशया ॥ पूरादिगननः धृष्ट कयकू मावट्ट न धात्रः निग्ध यननः सूधर्मा वगि वा निपा गरननः जन्मरुम ॥ क
विजकू मावधः सवजयज्ज लसंशकू शया चीन न ॥ वत्त कूणम निदू नः गेज पुका सइम ॥ नगत्युमा नृप विचिक पुमा दि
ग ४ सरुसा समूपां सृष्ट कू गा जे लि पू गा मूनाः पूरा दिग संप स नै व म बु वीग ॥ धृगु पुमा लः धृ पूरा दिगः सियकाः ह
धर्मानयागः गत्काय ननं कू विजकू मा लयाः धा सथन कतग ननः धृ वाज्र न विहो ग याः वाजा या धा स विगि यागः गस्थ वि
गियाग या धा साः रुधर्मानया नाः इगे न्य धन क जी नाः ना हाग निपा हाश जतयाः धृगु पुका जे विगि याग ॥ ह वाज
नेः हे म हा वाजः अप वा धि कू मा दया ची कटवः वन यागुः विनि याग ॥ गग ४ सूधर्मा जि ह न कू मा जः वाजं वा द्र सर्व स

५

मागगा ४०० हम्हद्विक ४ श्रीमात्रास्त्रीपेधागुकेष्वपि। जल्लोदाम्निविधये ॥ इमहायजः कृत्वा तं विवेकयारुथ ॥ गगु ४
उगु वषगैः सुधम्मि वनीया वषा गजरनेः कवित्रुमात्राजगैः राक्षस दया साकर्नः पूर्नरुणप्र थथिगुपुकाययापवा
कुसः गेजरूपः स्वर्गमध्यापागायसः सुयामद्रूमात जल्लोदाम्निद्रुम ॥ ०० गिसंप्राथिग गार्ह अवस्यं गवित्वान ॥
अपत्रमागायल्लूमायं जकारव ॥ ॥ नागायाकैः धूपिविगियाग विगियास्येतिः अवस्यभवंः गवित्वानगः अपत्रमा
गागैः जल्लः नागकूमाय वझारुच निश्चयन ॥ गग ४ कूमायं व्याधिधाने ग्रामसंधि कृणकर्म दयगमभनं दृष्ट ॥ ३
वंमस्तुवचनं ममसन्नुपनः चिग्रुद्रजगमन ४ ॥ उगु वषगैः ध्वनाजकूमायजगवज व्याधि याग्रामया धानसे सधिवृ
णकर्म मिगाश याचनः जित्वना ॥ आ ५ थउ वातकिउ गुद्रिः साकश्याः चिग्रुगुमनाश्या दशानक जरुया ४ ॥ ०० गि
संप्राथी वाझ ४ ॥ जल्लानृपगिसंलगसया ॥ थथधक धविगियागुत्वठ ना ४ ॥ जल्लानृमं न नागा आश्रदयकत ॥ गगु

अथ यमागाः वाजिनकुलनिगुस्य ४॥ विद्या नवूटय ॥ ५॥ गुवषगु अपयमागा या ऊँ न्यः वागा नेस्वया गेपिकयाः वा
 लवित ४॥ विद्या मक्रियाग न्वाग ॥ साधुगु नूना आदिकर्तृधायः वाद्यकार्ये स्वरूप समूह मभनमक्रि मूट्यं विष्णु
 सधगु ॥ इमन्ति १५५५ साधुधिया म्रकः ४॥ वाद्य या माडि ने समूह पायया चकार्थः वाद्य पायया क म्रकः ४॥ स्वरू
 पः समूह पायया क म्रकः ४॥ स्यतिः जिने मूत म्रमक्रि मूट्यं या नाग या ॥ ५॥ गुत्पु काय सूट्ये न निन्दा कृण कर्म ॥
 धित्वा ॥ का न्य ४॥ ४॥ गुत्पु काय सूट्ये न निन्दा कृण कर्म ॥ ५॥ गुत्पु काय सूट्ये न निन्दा कृण कर्म ॥
 दगयकाः कृण कर्म या ना चो नाथिय रूप धियिगु पु काय या साया ४॥ कृत्थं व्यकाठ रुग म्रः वाद्य या ल म्रि विचायम
 या क म्र ४॥ अथ मिधकः अत्तातम न वाज क मातं वात वित ४॥ ५॥ न व कल्प नाम मम वचन तं घयग ॥ अस्मिदिनः मम
 पा न सें देहः मक्रि वृद्धि दृष्ट ॥ ५॥ न व या यगु ४॥ का या क म्र जिगु वचन जायं घना या क म्र ४॥ या गु दिनेः जि प्रा
 न सें देह रुत क न गु मक्रियाग वृद्धि ट्य ना ॥ ५॥ पुन ४॥ इष्टे अथ यमागा ॥ ५॥ विद्या कर्म न म द क वात त्वेः अवत

गृहं कादयगुः व्याधा पूती मम नष्टम् ॥ उगु वषणु इष्टं च दाप अपव मागानंः भट विष्ठा धाय थुगु कर्म या ना जिगका
लम् वातम अवत व्याधा या ऊ स थ ग या गः थ या म या जिग के च रुज ॥ मम मृत्फु स व्या हा स ता स्य प्र वा धि गा ॥ पुन
मन्ति अस्मिदिने ग द्व धा पाय सिधु कर्म कूर्चः पूर्व का त सम यः द के न के द यः उका न गु फ न सिद्धं ॥ जिः सि ० गुः ल्या ख
या नाः दित म् स ह नं दित आ ने दु नं ची ना ची न ॥ रुग्म पिषा ना म मन्ति थ उ या गु दिन सः थ क् मा ज दू के गुः न ना र्गः
उ पा यः वितं र या य म गी पू या पूर्व का त वर्ष ग सः त्ति नः के द य ग स्या य म्ः उका न के न गः गु फ नं हः या य द् ॥
अस्मिदिने सर्व से न्या दि पु का भ य ग ॥ सर्व या घं गी स प गि अ धि का यः मन्ति ऊ हः ग वः सर्व मि गुः से न्य सर्व से पूर्ण धि
का य ॥ थ उ या गु दि न्यः सक त स नि सि पा हि द या ची कः सि के मा यः से पूर्ण या घंः गी स प गि ज्ञा मा ना ची न म् चः अ
धि का य रू या ची न मन्ति द याः थु पिया नि नि । सक त मि गु सक ज स न सि पा हिः वं ध य या ना ची न म् च ॥ सा धू र रुग्म पि
त्या नं वि प हि रू जी क रू सा चि र्द अ हि ग ना भः ची य च दू रु कि बु रूः मम पू र्ण मन्ति पु मू र्वा सर्व प्रा ण न ड स्य वा धि गा ॥

धन्यश्च पितृनाम निच्छेदकः विषगिमत्तुलियाकर्म अकर्मयाकर्मः धनुर्दिगन्तिरुद्रिगनाभयाकर्मः श्रीः
कायसंगमः रर्किर्बुद्धयाकर्मः धधिम् जिशु पूष्यावचनः मन्त्रिपुमूवतानाः दयाचीकलाकसकल्यः शिशुसंसा
ना कलखः वाधरूयाचीना ॥ गगः कूमातुं विदार्यगोः समायुर्दीना वं च यत् ॥ उगुवषगुः धधिम् कूमापयागः सिद्ध
याथः सपिपलायमापः जिशु आगुर्दीदगयः धवाद्यवंधयायमात ॥ ०० गिजाजावचनं शुल्वाः मन्त्रिपञ्चपेन सिद्ध
चगुपगसमावय ॥ धूत्रिः जाजायागुवचनं न्यनाः मन्त्रिनं संगापचायाः ननार्नः चगुपंगवचनयाः पिचकावन ॥
गगः समूपाविग्धसमन्त्रिजनधोपिका। कूमापंपुचपके समन्त्रग ॥ उगुवषगुदयाचीकलापित्वानाममन्त्रिः का
जिह्वादीशेन्यसिपादिपुजासकप्रमूनका। धकविचकूमातयागमापजनः सकलनक्षत्रत ॥ धनयावधूति ॥
गगः सूधर्मावगिसमाचाजः पूगुः सर्ववालीसवादयग ॥ ममः पूगुः अस्मिन्दिनः गवः जीवात्मा अं सयाः ममनट्टु
अत्रकूणमनिपूगुरुसुंददापयग ॥ उगुवषगुसूधर्मावगिनानिनं धुगुत्वसियागः धागुगयागः संपूतवालीत्व

कजाधाय॥ हे एगबंन जिहं काय च ॥ ५३ ॥ यागु दि न्य धुगु धा सजीव यागु आत्मा यागु र्गं सं पद त कं जिं ट्व भ धू न ॥ हे पू ग ज
त चू ग म नि च न ग ॥ ५४ ॥ यागु या ह सु त ग ज्ञा ना वित ॥ सा धू गृ नू पू गं न ग तं ॥ ग म व ना क य स्र त्व नं वा भ य ॥ पु ग्धा य न ग
न य ॥ ५५ ॥ सु ध र्मा स्व स्ति मं ग ल व र न ॥ आ भि र्वा द म हं ग व ध न द दा प य ॥ ५६ ॥ ध न्य र सा धू धा या ज्ञ च ॥ ५७ ॥ हे पू ग च र सा
ध धि ग ॥ ५८ ॥ वा स ची न्य मा ज ध का इ ट्व गाय म गे वा भ या ना ची पु सं गा प या ना ग न्य म गे ध दा का य म गे ॥ ध के धा य ॥ सु
ध र्मा या नी नं मि ट्वा नं ट्वा वि धा या हा य का स्व स्ति क ल्या न व च न आ भि र्वा द वि या म हा गु फ या ना धे ला वि या की गं ॥
ग ग ॥ ५९ ॥ चू ग म नि धा यि गे नं दा य क कू मा रं ॥ निर्ज ग्म म ॥ ६० ॥ ग ग ॥ म नि स्त्वा न स्त्वा नो ग ज ग म न ॥ ग ग ॥ इ य व ना क य मं नि
द द्वा ॥ स र्प ज ग नृ प गि पू ग नि श्च य ॥ ६१ ॥ उ गु व ष गे धू ज क वि य कू मा ज य त्त चू ग म नि ध य या ना म नि क धि ना ची ज वा
य ष क वि त कू मा त वि स्थ ज न ॥ ६२ ॥ उ गु व ष गे ग्व पि ट्वा म नि न ॥ मा ग मा ग रू या ॥ हि गु हि ता ग्व रू तं मा ग रू यं ॥ उ गु व ष गे
वि स्थ ज न गु ॥ म नि नं ट्व नं स र्प ज ग नृ प गि ना ज या पू ग ॥ ६३ ॥ कि ॥ दि व्य रू प ॥ स पु का भ य रू म हा गु फ न ॥ निर्ज

ग्रामः॥ गगः॥ स्याम्याज्ञा गयी यसीः कूमाजं वध निमिर्न। सेन्य संवाद यग॥ कानध साय त्रवृज मनि। गजपिक याभः गुफ
आना विस्मय नः उगु वषणु महा याजाया आहा गभ धन्य थूझ कवि य कूमाय र ग या य निमि गिर्न सिपा हिया गः अध
य या ग ॥ गगः॥ कूमाय ग्रासनः मृग निर्ज गमः त्वयि गं त्वयि गं। संपक नाग वा स स्तानं पु स्य ग ॥ उगु वषणु थूझ कवि
य कूमाय ज्ञा नाभ च या या धे ग थ या थः वा आ वा आ ग नः। अस्य तिव ना क ज स चै प क ना ग ना जा या द ह न स का वा गं॥ स
वृसे न्य पृष्ट २ त्वयि गं २ गस्तु अस्तु पु हा थ नः हा हा का यः स दृ न र ज ग ॥ संपूर्ण स नि सि पा हि लोक स क ल वी ना वी नाः
अस्तु २ अस्तु क य का ह ज हा हा का य ता य वृ या स दृ या ना यि ना ह ज ॥ गगः॥ ना ग वा स स्तानं प स्य गः से न्य नः न दृ द्वाः स
व स्तानं नि म्व य ग॥ कू ग ग ग कू य स्मि गः निर्लू यः म न्किय त्त न न दृ दृः प ग क वा य पू रू ष सा मू दिः न य पा द चि द्र पु भू
संपूर्ण॥ कूमायः पद क वा य पू रू षं पु रू ज न स म न्क ग ॥ उगु वषणु ना ग या जा या स्तानं थूझ क वि त्र कू मायः का वा स
घ नाः सि पा हि म त्व ना भ स क र ल मा त र त र या न ॥ ग न भ न ग व ची न ध क धा य निर्लू य या य म रू। मं नि पी स र्ग मा य
ज न र थ म यू या भ म त्व ना भः प ग क ना म वि भ का य स ग भः अध या गः म नू रू या गु मि पा यि द्वा च नं य ऊ न सि ग भ क

धृष्ट्यायाः धृष्टविजयकूमायत्तयकूमायधृष्टमनेनंधारधनयि। पदकनामपूज्यनेकविजयकूमायंमायय॥१॥ लयकेम
रुयाभासाकूयातिहोत॥१॥ धनयात्तधृष्टि॥ गगनेसमूपासिनदिव्ययूपमहत्पुतं। सोम्ययूपं सूर्यप्रांतिदिव्यात्तका
ययमनुगं॥१॥ महच्छीखोजमलिसंयुक्तं। यत्तधृष्टिगं। पञ्चकचम्यकनागनाजस्यः गिष्टकविस्मयाचिगं॥१॥ उगुवष
गुः धृष्टकविजयकूमायत्तवनाः दिव्ययूपयचोक्तः महागैजइमः पूज्यचोक्तगुः स्वयगुययापूः महाकल्यानया
नयाजसंः अनेगिसानंगियाथं वाननाकक्तः पूज्यचोक्तगुत्तवनाः महागैजकाकक्तः यत्तयागुचोक्तमनिद्र
क्तः धृष्टगैजइमः अजत्तवनाः चपकनागनाजायामनसः अजत्तगैजकाचोक्त॥१॥ गग॥ कूमायः ममस्त्वनभजर्ज
आयागैः गव॥१॥ कूमायंममनचित्तं वीधयः नः ग्राभनेः सूर्यनेवास्यः नागनाजनेकूमायं वीधयत्त॥१॥ उगुवषगुः
धृष्टकवितकूमायः गिष्टधृष्टमजत्तअस्येयिः धृष्टधृष्टचोक्तवनाः गिष्टचित्तं वीधयत्तः कनक्षायमगैः गिष्टधृष्ट
सूर्यनेवास्यः नागनाजनेकविजयकूमाययागत्तस्यविद्यागव॥१॥ गग॥ कूमायंममनचित्तं वीधयत्तः कनक्षायमगैः कूमायं
पदज्ञानसामूदिक॥१॥ गैः कूमायं निश्चयनागस्त्वनः पुविभनेवित्ताकयन॥१॥ उगुवषगुः

पतञ्जलिमनियोगः गजप्रः धृक्मातृहृन्संकीर्वागनिश्चयत्वजः पगकसामृदिनेः पवाद्याचयाविचायसिजीप्रः
धृक्कृत्वेसकएनमाताविचाययाकप्रः धृक्कविचकृमाननिश्चयमेवचचंपकनागजायास्कानेकीर्वाग
धृक्कः लानपाञ्ज ४॥ गगुस्सहस्रागत्वापदकसामृदस्य सन्निधौ पुनत्वेगत्पुवृत्तौ न निवाद्ययनि विस्तृतं ॥
त्रैविदेदिगमाकं लूगपिष्टानागि विस्मिगं ४ गग ४ सर्वसं न्यं पुदुयग ४ ॥ उगु वषगु सायधियासापिअ
यापवाद्याचयसायामं गियागनमस्काययानावृत्तौ न संकटात्यकनाञ्ज विनियोगः धृक्पगकने विगियागुत्य
न्यनाः रुमपिष्टाः नाममं नि विस्मयचायाचौ न ॥ उगु वषगु संपूर्ण सिधा हि चोक्तं उताचौ न ४ ॥ नानावाधः
हाहाकाते संसं ॥ अहं पुहाययग जाजा वचनं नागजाजस्य संवादयग ॥ इजात्मानागजाजस्य महाजाजस्य अपयि
गः वैपि अहिगदायकवकु उधायं ॥ नानावाध धानाः हरिकं पमाने थयायवृयाः धूयः अगने दहच संकयका
थं गस्त ॥ अहं पुहाययाना ॥ जाजायागु वचने सं न्य सिधा हि संकस्य न धयाचौ न नागजाजायागः खज्ञानाधयाचौ
न ॥ हयापिष्ट नागजाजाः महाजाजाया अपवाधका न धया वैपि अहिगयाग कृमानयागयजागयचं ४ ॥ चंपक

गत्कायलनेच्छादयेतः ममनवाजकुंठं हृष्टागवठजतम् वगुष सर्वगसिवाग्मपयेत् ॥ गगठगममदम् अदिध
 पथममहयाः पवनुनृपगिकुंठजतस्कृतस्कृतगतवित् ॥ इचपकनागजागाननानेः गोपगाहिमहसाः जिमि
 वाजानं गं मे सायीजः चं नगः दहं हं कं गाधूयू अगधूत्व हसकगाने गापूयावियः उगुवर्षगु गुमदयके द
 अदयके दयकावियः जिमिगु हृमिमपूजाजीपगसजाजानं जतस्कृतयथाय हृष्टयायगु सामर्थ्य ॥ १० मिगवठ
 सूद्वनः नागीनिस्कानं पगिकुंठपवाथगः आनन्देनवासया अत्रुर्न कूमाजं च्छयिगे ॥ गमासीनेसमाताक
 पापिनस्सविस्मयाः जिमिगु हृयतीगचिगः १० यवकूमाजं सेवादयेत् ॥ थयिचं रुसाः सूद्वनः नागीनिनापची
 नापगिकुंठयानाः चोठुधसा वासयायधसा आमत्रुर्न कूमाजं गातगाहि ॥ थयधक धना
 जयागहिनक ह्यायापापिपिस्स रुकाधवः ह्यानापकम्पयाः नागजाजाया ह्यानाजः अंदावचिर्दयाना जाजक
 मायनापटवज्ञाग ॥ गगठकूमाजनागजागस्काने सूद्वनवासयेत् ॥ गवठनानापुकारं सेवादयेत् ॥ कूमाजं मम
 नासमर्थः जाजस्मानं ममनहि ॥ गगस्स रुसागत्या नागजाजस्य संनिधौः गत्पु वृद्धीर्दनिधेदयनि

विस्तृतं ॥ उगु वषगु धूक कवित कूमाय नागजाया स्कान संसृत्वं ने धूक कूमाय वासया नाचीन न्न थउ नाग
 जागानं कूमाय याग वूउ य यागः हे कूमाय जिजा या यगु असमर्थ रतः नागजगज वि डि मत्तु झां ॥ उगु वषगु
 कूमाय नागिनी पनिस कथं वृजना चीना ग धूगु वृकाने त्वसकटां धाय ॥ किं काय न सय पिनातः श्री सम्य गिहय नः
 गवः गिव हय नः दाय क स्य चं प क स्कानं गय न पु याग ॥ गगः मरु किं वृण मृनि संयुक्ताः कूमाय नाग जाग स्य पि व
 डय गि विस्तृतं ॥ हे कूमाय चू काय न धा सा डि गि स क ल श्री सं य गि सु धा नं रू पुनः धूगु धा स रू न थूक कूमाय रसा
 नाग जाग या गय न ज ना चीन न्नः उगु वषगु सा रा या क न्न य त्त वृण म नि ड न्न सै रू क रू या चीन न्नः धकः कूमाय न नाग
 या के विस्तृतं ॥ वि कि या गे ॥ सा धू गृ लू नाग जाग स्य म म ग म नो ग वः म मे न प य नु द या का यू ल्ध पु स न्न ॥ गगः दा य
 क स्यः या गि स य द ह न स्कान पु स्कान य ग ॥ ध द र सा ध ध या न्न चं कू या नि गि धा सा स क य या उ य य सः क रू ल्ध इ न्न ह
 जि ज न्यः धूगु धा सः जि नः पि प ग स द या क यू ल्ध पु स न्न रू य मा य ध कः उगु वषगु क वि य कू माय ना गि या स म य द न
 स क रू या न्न द ज या चीन वष गे धा ज याः ग म न या नो ज न ॥ गगः प्रा ग का लेः ली धा य र य स गि नः वज का व स्कानं

ह

पुविसन्निमहास्यपथः॥ गगः पदकस्य नागवासस्थानं पुदुयगहृष्टाः कुमात्रं पत्राय के गगादुर्गं ॥ उगुवषगुः नस
नामस्यं त्रिरयमद्भरुसा एयनहृनाम धूव्याया उरुसदृहमना सूत्राचानंः उगुवषगु पदकनाम नागवासयाधनक
याः चाकजडाः सात्ररुजः सुसंजिक विजकुमान विस्मयनं ॥ दाजकस्य पाइकाचिह्नंः सामुदिकस्य दृष्टाः ॥ वित्तो व्य
गेमहाभ्यर्थे सविस्मय एयाकूला ॥ पुगुष्टस्वस्वभक्ता त्रिपत्राय के गगादुर्गं ॥ कुमात्रयागु पात्रीयागु चिह्नं सीयावप
दकसामुदिकनंः धूव्याया उरुसथनधकागत्वनाम मक्रियाङ्गन्यधायः रुमकिः महाआनंदन विस्मयनंः महाआ
भ्यर्थे चायागु थगः थपत्राट्वाचकेना अगि विस्मयरुगुसा एयंकवयानाम ॥ थगुगुगुः अरुः अष्टमाना सकजं व्य
गथयाः अनं ॥ गगः पजका वस्थान पुदुयग ॥ उगुवषगुः धूव्याया उरुस ॥ चारुवपं धिपयानं ॥ गगः कुमात्रदभ्यर्थ
गः पजका जस्य अगि पृथनदृष्टाः ममस्थानं गवली आयागः संकेष्टनः पुविसयाः मभनं वडा उद्यानं ॥ ममगृहं स
र्वसैन्यादिवायगुः गवः गतवस्तु एयाकज अगियत्तं पजकस्य नदिपात्रगमनं ॥ उगुवषगुः थक विजकुमात्रव

स्थितिः धूव्यायामनसः अग्निकवृत्तावायाः सागः जिगुच्छाने अत्र नञ्मः संकष्टनजिधसुअवः आगजिनं वशायाव
 मावः जिगुञ्जवाधसाः संपूर्णसंन्येसिपाहिधिययानाचानः पूगुधोः जलजिंयायमावः हिजाधवसंहिजाहिउञ्ज-न्य
 धकाहिजाधापाकायाधकविचकूमायगयाभः धूव्यानेपिहाभनः नदिपातसगायगाकोगं ॥ गगोसोः सत्यवगस्यपू
 यः सस्तासयन्विगुद्धाएः पुविसगः कूकूकालनिवसन ॥ रुद्धकर्मपुकारुनाः तुकस्मिसमयंविचाययन ॥ गगः यजका
 चगृहः पदकपुविसगनहृहाः सर्वसंन्येः आगगाः यजकावस्छानेकूमायंसून्यः ॥ उगुवषगुः धूमसत्ययर्थनागाया
 पूगुकविचकूमाययागुजलचूगमूनिः गजपुकासुअयानावांरगनाञ्जभः कूक्रावयाउंससूवाचानः रुद्धकर्मयायगुः सा
 मर्थदसानैः धयिसमयसायाभः यायमजिअधिकाहाययाञ्जचानं ॥ उगुवषगुः धूव्यायाः उंसः पनाट्यावयायउंससू
 अः सामूदिकनं ॥ दूहाञ्जनासागः संपूर्णसंन्येसिपाहिसकथेदूहाञ्जनाः धूव्यायाउंसध्वकूमाययूयकैमरुग ॥ पद
 कसामूदिकस्यः दावकस्यपाइकाचिद्धरुत्तरं दगुः पिट्यानस्यनिव्यदयमिविस्तुनं ॥ पुनः पगकावाव ॥ ॥ ॥

मिसं प्राथम्याना सोऽपि पितृना। श्रीमहामणिः पगकचापपूज्यमात्मवर्गे यमिमेव वीरः। उगुवषगुः पदकसामुदिने
रुतसाकविजकुमाययागुः पात्रियागुचिह्नगनखरुं मखनाम। अगस्त्यगसायागुः अपित्वामंक्रियाके। विस्तारके। विनि
यागे॥ जिह्मथरुतपायधूना। ध्वकुमायधनं पितृमन्त्रे धूनकजधक विनियोग॥ ध्वि। विनियोगस्येपिः ध्वजगुपिषामं
क्रिने। सकलज्ञानं पूज्यरुम्। सामुदिचापवाजसियाचोम्। ध्वजपाट्यायस्वया आह्लादयकज॥ गग० समूपाविग्धं। समं
क्रिजनपोषिक० सामुद्रिचापपूज्यं। यथायथमार्गसमूपाभयन॥ गग० क्रूरकाजंग्रानं। क्रुमायदग्गियगुगुगिक
पूज्यासिगुरुविख्यामि॥ उगुवषगुः। दयाचोकः। मंक्रिप्रजासिपाहिनीरुनमूनकापगकसिग्मम्। ध्वयस्सस्सस्वया
हिगुहिनावावोम्ने॥ अगुसायाजाधासाः इत्यरुतागुवषगुः ध्वधगुखनाः हार्गः ध्वकविजकुमाययापाननाधासा
अगिकर्नाचिगरुते। अदोवचिह्नरुयाचोन्॥ ममः स्तुनेगजन्मगग० यथायुक्तेन। जडाकर्मममनक्रूर॥ ममज
हृदयव्याजः नः सर्वजन्मादिनादयेग॥ गग० पगकसामुदि सर्वसेन्यः क्रूरकानेप्रवेगयः क्रूरकायस्यगुगु

ने श्री सुमूर्द्धा उल्लासयत् ॥ त्रिगु धामा भवन भग्न याग धामा मगि नूय कनः गधः रुकै नः नडा कर्मः जिनेः मय न गध
 याय ॥ त्रिगु रु। सिग धाय धकं। आदाने वि या म ची नः ॥ उ गु वष गुः प ग क सामु दि नं ० संपूर्ण सैन्य मूकाः कू आ स
 या ड स पि न्य ची ना ची नः हे कू आ य आम क न भ म ध का कू आ या ग वी य विलं। आ ना भ न ना नी। सि ध य नं ४॥ ग ग ४ कू
 मा यं भ व व्या ज न। प ठा म्ब ता दि पू ष्य मा ला। स म र्प य ग ॥ च गु र्थ पू र्वः सं मू र्वा ना ना वा ध नः पृ ह २ आ द ये न।
 निर्ज व नं संपूर्ण ४॥ ग ग ४ कू मा यं ग त्थ न का द य गः कू र्का तं। गृ ह पु वं भ य ४॥ उ गु वष गुः की प ना स ग या म २
 धू म् क वि य कू मा य या ग सि ध य ना थः द भ नं दाय का स्वा न मा या की। ट्या य काः ध म् स्य नं कू वू या म। इ भ ४ र वा
 जंः ध का। जि उ ठ २ वि या म निर्ज व न ध म् स्य पि ४ उ गु वष गु क वि य कू मा य या ग थू र्थ आ स गा न गा की गं। कू आ
 त या ग य पि गा या म। जि हं भ य ४॥ ग ग ४ प द कं व च नं। सर्व स्था न इ य यत् ॥ न ह ४ ॥ सों मू डि पा रू का चि त्तं वि चा य
 यत् ॥ द भ न क य। सर्व पा रू का चि त्त रू त्त रं ॥ उ ग त्प का य प द क स्य वा च ॥ ४० मि व च न। गु त्वा। स म क्रि ज न पो नी क ४

निर्जनवनसमूपागुयाग ॥ ७ ॥ वषट्पुः पदकपाशु वचनठना संपूर्वमेतिनेः मानास्वरुतं रुयाने मद्यनाः पदकसा
मृदिने साग ॥ ८ ॥ आनकसकरने ॥ गनषु मयधु प्रिया निगु मेगिया केविकियाग ॥ ९ ॥ धुवि वचनठनाः मन्त्रिप्रजा
सिपाहि मूना निर्जनवनसं साजने ॥ १० ॥ गग ॥ ११ ॥ जाकजं कुमाजदग्गियनः मन्त्रि सर्वसं न्यादि स्वस्व ससाधनं पुहा
वधग ॥ १२ ॥ त्वयि गं त्वयि गं गमनेः साकर्म चादयन सासा गपि जं सर्वगु च्छाजिग ॥ १३ ॥ पिटवानस्य पुपि चि गिगम
मपयि सम एव ॥ गव ॥ कुमाजने एदयग ॥ १४ ॥ वषट्पुः आकाससं ध्वकुमाजद्वनं त्वस्ये प्रिः मन्त्रि सकज सिपाहिग
नपि स्ये प्रिनाः धधगु सस्र ॥ १५ ॥ धधयाना कविज कुमाज कयका ॥ १६ ॥ नगनः कयका च्छेगः धधदका वय
पि कया कयका च्छेग ॥ १७ ॥ पिटवा मेनिकिया चिं गनायागः जिं न्रसमर्थरुय धधरुयानेः जिं नापजायम दूधका ॥
धध ॥ १८ ॥ मेनिकु ॥ १९ ॥ मूर्तिः ॥ २० ॥ धधवगस्य त्वयि गंः गग ॥ कुमाज वायु वगस्यः त्वयि गं ॥ २१ ॥ दाजकस्य एवाधचद
नदृष्टाः महावद ॥ २२ ॥ अरुतस्त्वनं कुमाज पग्ग ॥ २३ ॥ गग ॥ २४ ॥ स्त्वनं वृद्ध पूजामनी चादयगः पृष्ट मन्त्रिः

आगगनहृद्वा ॥ उगुवषगुः संक्रियागं पिकयाः सचयागुवेगथयाः अनेः उगुवषगुं ध्वक्मायवायुवेगथ
 याः अनेः उगुवषगुः कूमायवाधसाः अगिरयययाः मिटवानः कूमावनागः ध्वं ध्वं अनेवयसः ध्वं गमइगु।
 अंगवसः ध्वं कूमायवाकावाअनेः उगुवषगुं अंगुगययादूसेसः सिमायाकचासः चूगमनिरुचसां ध
 नाचाः अंगु २ अंगु कूमावनाग ध्वं ध्वं अयास्यगं ॥ हसेचलाक ध्वक्मायवाः ध्वचूगनिमदूस्पं विः गनध
 ध्वयापानवनवचयययि। ध्वकयायजनेः धकाः ध्वजिवदयाचानः आध्वमदस्पं विः धध्विगागुगयसकावा अ
 गनेवचयययुधकाधय ॥ गग ४ सूगमनिमकिः समाहिगः संपुभादिग ॥ गग ४ पांचाविद्रुकापिल्यनग
 ययुधगं समकिः जनधोत्रिगं आगग ॥ गगसमूपाविग्धसमकिः जनधोत्रिक ४ अतातगमरुनं पुनत्वासमूपा
 गुयग ॥ उगुवषगुं सूगमनिपत्तं मसूरमिजककयागः अगिरुर्वमानयानागधयं आगडिजि ॥ उगुवषगुं
 पांचावधयागुद्रुगुः कापिल्यधयागुनगयअनेनूः सिपाहिदगजनसकसेयिहं अय ॥ उगुवषगुं सकयपुमूटव

मंकि प्रजासकस का पिथन गज सकस्य ने पूजा या जगत् अक्षय मं न जागानमस्का ज। याना धाय। हे महा या जग
 धूमः गुमदं अ न व द या चो क ज ना सं गुम या ना ज या गुटव सक गा वि क्रिया ग ॥ दा व क स्यः गुमदं अ न व सर्व
 स्थाने सं गुम वा ह्य व च ने सं वा द य र ॥ ग ग ॥ वा गा रु सं प त्त चू ज म नि स म र्प य ग ॥ उ गु व ष ठे या गा या ह स्त प त्त
 चू ज म नि स म र्प य ग ॥ ध नं तिः क वि त्त कू मा य या ग ति ना ज य नाः रू कः प त्त चू ज म नि क या ह या ना ज या ग त्त
 ज्ञा ना वि गु या त्व ध न या त्व धू यि ॥ ॥ अ त्ना त म न क वा गा या म न र्प सि रु याः सक तः मं कि या ग प ज ग न सक स्या गं
 सिया हि सक स्या गं र्प सि रु य कंः रा दि सित पा त वितं वि या ज थ म नं वा प्र स य या ना ज चो न र तं ॥ ॥ ग ग ॥ कू
 मा यं अं ग न म हा य ऊः क्षा स्थाने व ऊ उ धाय य ग ॥ ग ग ॥ अं ग न स्यः स्व गु वा सि नाः अं ग न स मा न व र्णः य उ र उ
 र वि द्या मि ॥ ग ग ॥ कू मा यं पृ थी पा रू कं ग म नः मां का ज सर्व ण कि वा स नः नि वृ न ॥ उ गु व ष ठे धू म कू मा य

याद्याजवेदनाचूं मरुतः अंजनमहाजडनः धमगुधसगयाः चक्राया नागवः उगुवषगुः अंजनजडयाः अंजगम
 वसः गुफनेवास्याकक ध्यावन्नरुयी मिच्याकं हाकूगु वर्तु अंजनधं हाकू धनने कूमाययागवः चक्राया नागवः उ
 गुवषगु कूमायनं पागायसचूयाः गुगिनेचूयाः गमनगनाचानः आकाशः सकयपेंचि दयाचोकः पेंचि वास
 यानाचानः गध धमकूमाय ४॥ गग ४ सूधर्मावगि र्मपिटवानस्य समाचारं समाहित ॥ मनगुहृनरुगुपाग
 स्कानममप्राणं छादयत ॥ ममकर्म अथित ४॥ उगत्यकायनसूधर्मावगि र्मपिटवानस्य चिरुगुहृयौ ॥ १४
 त्वादिव्यधाविता आगमनः सूधर्मावगि र्मपुवोधयत ॥ उगुवषगु सूधमावगि र्मपिटवामं गिनः
 महाजागायागधगु समचाय नानिने सियाः नानिया मनगुहृयानाः क्रसिवापसको बानागः जिगुपानसिषधक
 चानः जिगुकर्मधिकाय २५ गुपुकार्यनेः ध्यानिनः मगिकल्यनायागुषनाः चिरुगुहृरुगुत्वसायाः धूगुः
 त्वः नाः उ नागः आकासगु गिनिपिः गयाग सूधर्मावगि र्मपिटवानस्य आकासं रयासा विद्या हव ४॥ ॥

हस्तधर्मा किं काय न प्राप्तागः न त्यागः न वः पूरे कृमायं जीवतिः अंगन स्तानं जायते ॥ न वः चित्ते बाधनं न स गृहं पु विभ
मि सर्वता कमागः ज्ञानागः सत्वेन संप्रसादिनं ॥ हस्तधर्मा वगिजानिः ॥ चू काय न प्राप्तागः याव न जाः याव मगः कं न प
प्रजाग कृमायः कृमायः कृमायः कृमायः अंगन रूपा धान विषा ना चान चित्ते या ना चू कंधडा काय मगः मन रूपा सचाय मगः न
नानं धमः कृमायः कृमायः कृमायः कृमायः अंगन रूपा धान विषा ना चान चित्ते या ना चू कंधडा काय मगः मन रूपा सचाय मगः न
रूप दयि मिनी धक गुह्य आका सगः गिनि नं आका दय कलः कं न सत्वेनः हस्त मान या ना पूया गु नाम कया सो ॥ धन या ट
धूमि ॥ ॥ गगः कवित कृमायः अंगन रूपा धान विषा ना चान चित्ते या ना चू कंधडा काय मगः मन रूपा सचाय मगः न
वन दाव कस्य गमनं ॥ गगः कृमायः कृमायः कृमायः कृमायः अंगन रूपा धान विषा ना चान चित्ते या ना चू कंधडा काय मगः मन रूपा सचाय मगः न
सनेः जल न या नागः मगः अंगन रूपा धान विषा ना चान चित्ते या ना चू कंधडा काय मगः मन रूपा सचाय मगः न
ज्ञानागः सिन्धे रूपा धान विषा ना चान चित्ते या ना चू कंधडा काय मगः मन रूपा सचाय मगः न

प्रवर्गयानां न॥ व्याघ्रः हस्तिः वनवाजः स्वानः असंख्यथा नस्त्वित्वाः इव इवः गजामृगमर्कयः सर्वपि वासस्तानः क
मापुस्वग॥ गगः सचिग्रुमइयं प्रवर्गः नवसर्वथानेन दृष्टाः महारजं पिंगतनामः एदथग॥ पिगवाजः असिनिद
वट० इहमगः दावकस्य इव स्थानं प्रवर्गं घनप्रकाशयग॥ उगववर्गः धूः किंसिः सिंगः विचाः असंख्यदयाची
नथा सजागद्विजसायाधियथ कटिका गात्रचाकूयचासगसिनगीन॥ किंसियाः इह पृदिगानां मरुचायां स
कतसिंहः अइवचीगगः एयानकथायसः मनुष्याया एवमइथसः नागं उगववर्गः थगुचिहगुमनयानाः इ
प्रवर्गयानां नवमनुष्यसंयाने मइमत्वः थपिगुववर्गसः व्याधिके ज्ञानापनागकूमायनं सिपुलपुगुमित्वा॥
८० दशवर्गः अधमिथव्याधने इवगीन्यगुवा केनाधयाकूमायनागकीगं॥ अस्मिदिनेः कूमायनत्रकपू
प्रवेदृष्टाः दावकस्य कनून्मचिहपुकाशयग॥ गगः प्रवृषस्य संकष्टपत्रिगः अंगसर्वथाने इगथनः चके
प्रवर्गयानां मागापिगानामपुट्याकचरुधायनादथग॥ पृथिवस्थानं उवर्कः प्राणिनां प्रवृषः असर्ग्यवदनागुनाः
प्रवृषस्य हिरुकिपयिगापिगा॥ उषेनूपादिनेः कूमायनः चकप्रवृषत्वने कूमायनं त्वनां कनून्मचि

रुयानाप्रपूषयागधनः। उगुवषगुःप्रपूषयागधनः। संकष्टं पयि समरुयाचीनम्। धयाम्नः सकलनेः। धायरुया
चीनः। धायगनाचीनः। हिपूयिहोमयाचीनः। हिपूयिहोमयाचीनः। मायागुः। कडयागुनामकयागुः। हं हं मां २
धकावनीवजः। धायाः। मिषानं। धाविपिकयाः। धायाचीनं॥ धनयि। धगुगुकायं। धाविजं नं प्रपूषयाः। धदना संक
ष्टनयाः। केकेः। गुं गुंः। ग्वदग्वदगुनाः। लजिनं। रनकाः। म्नेनां पंधावगिकाचीनम्। प्रपूषत्वनाः। धगुगुइ ४८८८८८
गायः। धम्यागधनविज ४॥ उगुत्प्रपूषस्य धदना कूमायस्य दृष्ट्याः। साअगुकेभजायगकायकगगनं॥ साधूर ४८८८८८
प्रपूषः। अगिअहिगनवेदनाः। कष्टपयायग॥ किंकायनं रगविनआगगाः। कूमायनप्रपूषस्य संवादयग॥ गगु
समानवः। महाप्रपूषस्य सन्निधौः। पुनत्वेगत्पुवृत्ताकं निवेदय निविस्तवं॥ उगुवषगुः। धमप्रपूषयागुः। धदना
याचीनगुस्य याचीगुः। धमनहनागुः। धवनः। धगुधंदानं धनधव्रमसररुयसाः। विमिस्तुर्वीरुअं पिकयाज्ञानाचीन।
हं साधूर ४८८८८८ प्रपूषः। सुनो ग्वर्जस्य नः। आमयिगवेदना कष्टनकागजः। कूकायनं धनरगविनअगयाचीनाः। धध

धकाः कूमावननः इत्यपूषया केन्यनेः उगु वषगुः इत्यपूषनः महापूषयागः ह्येयः नमस्काजयानाः त्वसक गाः
 इत्ययागुः त्वः विनियोगं ॥ साधु भू नूः महापूषकिः कायर्कजागता ॥ इह पिगयाऊनं पुकागयता ॥ गव ४ मम ३ ४ त्व
 संक ह मूक ४ गा अनंगमनः नस्तानः साहाक ह २ ४ त्वसिष्ट मूर्च्छा पुये ४ साधु महापूषः नागि ३ प्रः सूदासनामः म
 सा २ हं वासयता ॥ असूर्य वेदानाः चंद्र वेदितः कूज वेदितः जमजागस्य महातयंकयाः सूदासस्य रूपं ॥ उगु वषगुः सा
 धुः हं च सुनानेः ज्वलस्य नः चोया हयः चोकाज न धनयाः इह पिंगल व्याधानः धनवर्क ना चोया हयः ॥ धूगु
 थोः जिमहा इत्यसं क ह गिरुतः ॥ हानायाः अनंग ४ धनयाः मदयका चीनः साहाक ह २ ४ त्वधक हाजाने कूमाजः
 धम मूर्च्छा रूप ॥ मूर्च्छा रगु जे काज धात २ मूर्च्छा ये गु स्वयाः इत्यपूषनं धाजर हं साधु महापूषः नापाक मरु
 जः सूदासनाम व्याधाः महा २ ह र च्याजरु ॥ धनवसप चोना चीनः सहयाना सहयाय मरुः वदा चं दायः
 पूषप निसः जन्मजाता धाः महातयंक य मूर्द्धिः धूम व्या धाया ॥ गन ४ सूदासस्यः संत्व मूर्त्वं साजधयगु
 जं ग ४ पाथ पूषरा २ धन ॥ सर्वमानवस्य अहिरा धा २ धानं २ व ४ ॥ अस्मिदि नममगं त्वमूर्त्वं सहस्र प

जायतेः समः सर्वांगरुगये मर्म मर्मा करः ॥ गवः मूर्ध्नि मागु रगिय घटि सजीवमि । मध्या अपहवः सूदासस्य लक्ष्मी
परुषः गर्ध्वमूर्ध्नि नग उयेगः सूदासस्य ममजक पियन ॥ उगु ववगः सूदास व्याधयाः अर्ध्वया गुट्टाः त्रिचाः ॥
त्रिचानः महा एयं कय जस अमः पूष इर पिः नया विपिः सकलमनूद्य नयाः वूर्णानागयागुः काचरू कं
आमथासः पट्वाथ जेग सूरुया चीन । थउ यागुदिनः जि । अर्ध्वमूर्ध्व त्रिचायाः जाहा मिजाना अः जि स विजसः सज
सः ध्याव घावरुय का चीनाः स्थाना चीन । थउ थासः एगि चामानिः निधो मागुः जि म्वा यदनिः वाद्रिजा वमः पुह
पुसः व्याधन अयाः थअ गो पना अया लक्ष्मीरु युगु उ पय स त्रिचा चीना लि अर अर गया अयुः ॥ ध्वने जका अ ।
याना चीनः ॥ ध्व व्याधनः जिगु हिल्व नि ॥ पुमिदिने उगत्यु कार ॥ १० गिव चनं गुत्वा क मायस्यः निवा सुध ॥ ममचूरा
मनिहवर्णः ममकि पृथाजनः सार्थि मिगु रत्न ए । हाहा प्रावक हरे ॥ गग ॥ सावि तात्मा क पूर्णः अलू ताहु दय व्य
दना ए विष्मि ॥ गल्ले न मागु क ह ए व ॥ गग ॥ अय की हरेः जउ नीस्य । एउ य ॥ वनिक पूरुर्व आदना अर्धः

सार्थवाहगामनार्थविजनः रगवन्ममः पाजकूमाय कर्म किं पृथग्नः व्याधस्तान्नमममः ॥ उगुववगुः द्विधरथुगु
प्रकाययानाचीनः ॥ ध्रुविधगुवचनठः नाः ध्वजकविपकूमायः निपधरुयाधायः जिचुगमतिमदगः यैकधूनकै
यः जिं चूं पृथग्नमदगः सायथिवासोमद्रहाहाहैप्राणकहरुयः उगुववगुः थअचिगआत्मापमिः कयूनागयाः
ठनामागुः नूगवसः वीदनाशयः संकसुसुत ॥ एगिचाकहरुसुउगुववगुः नयाक्काथसः पाउसनीयनीस्यनः न
यागयाः वनिगायपूवृत्तः धायाहायासदेनैः सिंहसार्थवाहः शकध्वं थपाजकूमायज्ञनाः धिपगयानाअधिया ॥
हेरगवन्हाहादेवजिपाजकूमायरुयाः कर्मजिचूं पुः थग्नमरः कैवर्हव्याधयाउसः जमरुमजि ॥ ध्रुस
गुगानृपगिपवाधवेपिः महगापिनच्छादयग ॥ सहसासमूपागणं मेनिजनधोपिकाः स्वस्वसहाधुत्वाः ममः
ऊदननिमिर्ह ॥ चंपकस्तानंअवर्गगत्वाः गवच्छादयगमम ॥ वपूनायजकावस्तानंममगमनः गथानंछा
दयग ॥ गगः कूम्हाकायगहंपुविअतिः ममगवस्तानच्छादयग ॥ उकस्मिसमयानकवगत्वाः अंशधनः अंज

नस्यभवर्गममः गत्थानेमभनकादयत् ॥ ७ ॥ गुवषु । दारुधासाः मरुताजाविनापयाधसुवे विरूपाः । मा मनेः गोप
 गायाः आयाधः ॥ ८ ॥ आयाः सेन्यसिपाहिः ॥ ९ ॥ गुसुत्तुमानाधयानाः जिगः स्यायधकं अज ॥ १० ॥ चंपकनागजायाः अ
 वलजानाः धनः जिगोवगाहवः चपूतः हनेः ध्व्यायास्कानः जिगानाः धनं गोवगाहवः अननः कूआयाउसवि
 स्थयायाः जिगधननः गोवगाहवः चपूयादिनसः ॥ ११ ॥ वनाकयजिमहागुप्यः अजनयाउसयाः जिसवज
 जनाधननं जिगकादय । गोवगाहव ॥ १२ ॥ निममवज्ञानरविष्यमि ॥ गगः गत्थकायिचपुआः एगवन्ममजमकिंपृ
 योगनः मवपुविचिकया ॥ १३ ॥ गगः सुदासइहजागगाः चनकादनुगुगः वनाहस्यवकं समर्पयगचइहमिकं पायमहाध
 गत्वपिआगगाः वामपार्श्वभृत्वमृत्वसाजभय ॥ १४ ॥ मृत्वमृत्वस्यदकंः चाकंकाकं पादवकंकादयेगपृथिगमग ॥ १५ ॥ गुवष
 येः धूयिः जि । जियजामरुः धनगकंजाने ॥ १६ ॥ गुवषुः धूगुथास । सूनाजिगवजायायि । हएगवन् । हाहादेव । जिगुजम
 मचूयाधिकार । मनरायपाचोनवेजस धूगुथास ॥ १७ ॥ गुवषुः सुदासनामव्याधचडाजगतः गत्थजयधासाधिनू

कवताभाजाभा। अगिच्छाक। ताहा। नगयू। छायागु। द्विपिकयाभा। त्याउगु मित्वायाना। छायागु मित्वा नें बूधन सायाभा
 सायाभा। हामिकं चानरुभा। धावाभा। धों धों भाव। सुदासवाध्यावाटवभा। सगयपगसभा। निष्कृतिवाचक मित्वा नयाः दिवः
 चायाभा धासा। गयाटं कथं द्वाय। प्यट्वाय संदिने कि काभा। हामि सचूयाभा। ॥ मृगभा मंगरागः। समजा नं गंगतः
 सर्वसूकः सर्ववरोह उयवनं॥ सायभयः विधागाः सर्वहस्ति स्तानं पश्यः वनाक्तय सिंहपाजं पयि शुभः गवः दृष्टनः
 वनजाज नहस्ति मर्थनसर्वे॥ अथ मृत्वी हं हं कातभा। वने जागताः त्वष्टिः धनू सर्व मृगभा दिं सर्वज कुविस्मया निपु वि
 सगं॥ उगुवषगु। चयापिनी गः इगता कथं पिम्। चामयसायागं। धं वधानया व्याधिपः सकयवनाह वधानयाः उ
 यभायथं॥ अथ मृषि विचानं॥ संपूर्ण कि सियावधानस पश्य रुयाभा। वनाक्तय संः सिंहपाज यागः इषयाना गथं
 ध्यत्वनाभा। वनयाजा सिद्धहने। कि सियाग स्यायगु मच्छाव॥ अथ मृषि विचानं। हं हं काययाना। द्वाहाउना। धों
 धों भावाचान। गय धाम्यसा। अगम्यसा। सकयदि भावधान। चया। वनजं कु। चयापनि। वीस्मय रुया। रागभा रा
 गरुया विस्मयन॥ कूजकूज गत्र द्विगियरू मावस्य दृष्टाः गगः सर्वज कुपु विसगा दृष्टाः गवदात्र के महावेगन॥

प्रविश्य ॥ गगः सूदासस्य दृष्ट्वाः सावभयच्छादयः समसमासाः कूमायस्य पृष्टः श्रुत्व मूढव्यागगाहृष्ट्वा ॥ महावगसमर्थ
प्रविश्य ॥ कूमायस्य पयि शुमनेः आमलककर्म वृद्धप्रविशनां ॥ उगुववर्गः ध्वकूमायपिः निम्नः ॥ अगुः ध्वकूमायः
त्वनाः धृगुधसः सकयजं रुपिसकयविस्यं अगुसायाः धृगुधोः दायक कूमाय महावगने विस्यं अना धृपिविस्यं अगु
त्वनाः श्रुत्व मूढविचिचागातगाकागं ॥ चो चो चो धिकधिया ॥ अगुधकधया अकोपाकोगं ॥ कूमाययापि अन्यः श्रु
षमूढविचाः वों वों अनोलिगं ॥ धगुगु कूमायधयाना महावगवों अनः ॥ अन्यगुसमर्थदगयविस्यं अने ॥ कूमायया अगु
पयि शुमरूया अः अं वमागया अः ॥ काकां धं क विस्यं अने ॥ पृष्ट सूदासः आगगेनाकागं दृष्ट्वाः गमनधयिकर्ण समसमा
स्यनच्छादय ॥ श्रुत्व मूढरुं रुं काय अदृष्ट्वा अयत्युदरेनः सूदासस्य सवनागमनधयिगः पुदरेनात्माकागं दृष्ट्वाः
गाकगुना ॥ स्वानस्य दनदृष्ट्वाः सूदासस्य संवयदृष्ट्वाः हाहाकाय अदृष्ट्वा हास्यं कुयदृष्ट्वा संवादये ॥ उगुववर्गः पिउन्य
सूदासनाम व्याधि अयाः धस्वया अः धनूक वलागा नाः धगुगु पन्यः धनकसाय अः धकः कयकाकोगं ॥ उगुव

वपुः श्वसूतवचिचानः क्राद्धाउनां गिनिनूया। चाकलउतः व्याधनंधनूषस वताइयागः चाकनउताः थसायागधान॥
 त्विचायागुभास्वया। त्विचायाउकसायाचानः व्याधनंधनू वतासायाः साहाकायगद्वयानाः जिजाः थगुवृपट्टहिसाया॥
 कूमाययागधाय॥ याजसूनुः याजयाजयत्साहा अथवायाजयाजः ममः अपियंसूदासस्यरुद्धकल्यनायाग॥ अस्मिदिनः अयः अ
 संइल्लरः एगवनचूगमनिहयर्न॥ मभनचूगमनिपुवभयग। वृद्धमार्गिकागः पंचिपुवाधयग॥ विधागाइइवः इहंपुपिचिगः
 स्वानंकायर्ननरविष्यगि॥ अकायस्यसिभरुगुनमान्येदानं किंपिथाजनः मिहृतावंकिपिथोजन॥ उगुवषय। मनंतायपा। णथिठः आ १८
 श्वर्यः याजयाजायासिनंचक्रवर्दिजाजाग अथवायागधायः कूवतः जिगुसपिर्गः थवाधागनायः रुद्धकल्यनायायद्रुमजिंजिंः आगकू
 याय। अयरुजः अस्तमदः अस्तमइः इल्लरुयाचानः देएगवनः चूगमनिहयर्नरुत॥ जिगुचूगमनि थइगुरुसाजिः सिमानंः आकास
 मार्गसगथवास्थनभंनगथंजिवासिनभनः आगकूयायः विधागानइववियाः इहमहाचडाववाधयागः त्विचायागमदयकं
 वेयिरुतः थउ। थूज्जथथिज्जयाग। सिभरुगुनकेनानंः मान्ययायगुगुः थवागयानोधयामइः मिगुयानानंः पासाइइल्लरावनं किंपिथाजन॥

कदाचिद्गङ्गवनः सर्वशुभं यच्चूणमलिः जायता कसर्वं पूर्णचन्द्रसागरं जन्म ॥ जगत्स्वानस्य व्याधिरसंहरवः एतव न्याक न कर्मलः य
जसर्वं अथियः जन्म जन्मान्न जपुष्टं आगगाः कर्मपूषार्थं विवृद्ध ॥ गगः संसायदहजन्म इत्यतः गुण सर्वकिपियाजनः इर्जनस्य व्याध
ननसकं ॥ पापजातं वासयः स्ववंशस्य निम्नकलः सर्वउन्नतगः महाद्वय अपाधीः इत्यतः प्राणभस्यः यवक्तुमत्रियं द्रुयमहाएय इत्यतः ॥
उगुववगुः गुवयसंः गुवतसंः हाहादेव हे एगवनंः सकजशुभीजनया चूणमलिजिः जायता लोकेः सकलपूर्णचन्द्रमायाविगुः थगु
कूजसजन्मरुजम् ॥ थथीकः विचायाहसः व्याधयाहससजाग ॥ हे एगवनंः पूर्वजन्मया कर्मयाग नस्काजगुगुयिकर्म निम्नयधारसं
दांस्तिवः यजलियगसः भवषक अथियः जन्म जन्मान्न जपुष्टं आगगाः कर्मपूषार्थं विवृद्ध ॥ गगः संसायदहजन्म इत्यतः गुण सर्वकिपियाजनः इर्जनस्य व्याध
ननसकं ॥ पापजातं वासयः स्ववंशस्य निम्नकलः सर्वउन्नतगः महाद्वय अपाधीः इत्यतः प्राणभस्यः यवक्तुमत्रियं द्रुयमहाएय इत्यतः ॥
उगुववगुः गुवयसंः गुवतसंः हाहादेव हे एगवनंः सकजशुभीजनया चूणमलिजिः जायता लोकेः सकलपूर्णचन्द्रमायाविगुः थगु
कूजसजन्मरुजम् ॥ थथीकः विचायाहसः व्याधयाहससजाग ॥ हे एगवनंः पूर्वजन्मया कर्मयाग नस्काजगुगुयिकर्म निम्नयधारसं
दांस्तिवः यजलियगसः भवषक अथियः जन्म जन्मान्न जपुष्टं आगगाः कर्मपूषार्थं विवृद्ध ॥ गगः संसायदहजन्म इत्यतः गुण सर्वकिपियाजनः इर्जनस्य व्याध
ननसकं ॥ पापजातं वासयः स्ववंशस्य निम्नकलः सर्वउन्नतगः महाद्वय अपाधीः इत्यतः प्राणभस्यः यवक्तुमत्रियं द्रुयमहाएय इत्यतः ॥
उगुववगुः गुवयसंः गुवतसंः हाहादेव हे एगवनंः सकजशुभीजनया चूणमलिजिः जायता लोकेः सकलपूर्णचन्द्रमायाविगुः थगु
कूजसजन्मरुजम् ॥ थथीकः विचायाहसः व्याधयाहससजाग ॥ हे एगवनंः पूर्वजन्मया कर्मयाग नस्काजगुगुयिकर्म निम्नयधारसं
दांस्तिवः यजलियगसः भवषक अथियः जन्म जन्मान्न जपुष्टं आगगाः कर्मपूषार्थं विवृद्ध ॥ गगः संसायदहजन्म इत्यतः गुण सर्वकिपियाजनः इर्जनस्य व्याध
ननसकं ॥ पापजातं वासयः स्ववंशस्य निम्नकलः सर्वउन्नतगः महाद्वय अपाधीः इत्यतः प्राणभस्यः यवक्तुमत्रियं द्रुयमहाएय इत्यतः ॥

[illegible]

यागः॥ विद्याधतर्ल जाकाभयागुवर्ल धलयानाः॥ अयाः कविपूमाययागकृत्वा विरुगया रुससुं चाना विरुगया विष्मगः॥ उ
गुवषगुः विद्याधयनेरुसाः विद्यायाग वाधयागः कुट्टट्टि + नंसायाः मम्वायकृमाययागः विनासकायस्यायधकः विमिर्ल
नक्षिमागयगः गयाययाना चाननः व्याधयनाः गंपिकातः विद्याधयि॥ गगः माकागं संवादयाः इष्टंगवर्गुरुपु वसगम
वाधयः॥ ममवार्त्ता वचनं वाधनः किंपुयाजनेन वाधनागः दायकस्यः इष्टवपु वसयगः ममननसहः अवस्युगयगः॥
उगत्तवार्त्ता शुयगोः इष्टनकुट्टट्टिः माकागं इष्टा संवादयाः॥ गगः विद्याधयस्य माकागं त्वर्जपु हायनः इष्टस्य भिज
उदयगः स्वानस्य भिचयगः॥ उगुवषगुः जाकाभेचानाः व्याधयाग वाय विद्याहसः रुचं डायकथनचायमगः॥ उग्रिहाह
विहाहं वीधरुयाहं॥ जिगुवचननयसाहंः मत्तुः न्यनमत्तुधयागु रुसाः जिनेचंगः त्वर्जनं पु हाययायगीत॥ चिरुवा
धरसाधुगुधामचंगु केहंः मत्तु वीधजामरुधयागु रुसाः धूक्तकृमायस्यायधसाः चानाचानागु रुसाः जिनेसहयायम
त्वः चंगनगस्यायगयः धूगुषजना व्याधनं कुट्टट्टिनेस्वयाः जाकाभधथस्वयाहका चंग॥ उगुवषगुः विद्याधयनेः गं
पिकयाः त्वर्जनं चिदायाहयः व्याधयागु गययगधदनंः विद्याधयचनरुचः॥ अहंकातस्यावसनः ताके ग्वयस्याः आ

नापदभः काविगनः इमियं ऊदयतः दावकस्य उक्ता यं ॥ विद्याधवस्य कुंठ सर्वत्रा विजडा ॥ गग १ मा ० यनाम कूमायं
 वृद्धमाकासं वाभनं दावक ग्राभनं तयसाकं वासन १ गग १ सनृप गियाजां कुंगा जैर सि पूपा शिग १ विद्याधवग मरु कं न ले
 वंप्रार्थय नृदा ॥ उवं के पुा निना सर्व अस वै वेद नाप पि पिदिनाः मृत्क मृत्व स्खानं सर्व यतां उधायनं ॥ तगवं सर्व १ प्रार्थ
 यग दावक १ ॥ उगु वषगु १ अं ह काय या वसा सं या के श्वय या हान या उय दे सं ला य मन का भ नि म्म स्या तं स्या ना वि यः क वि य
 कूमाय उधाय रुय य जा रुय विद्याधव या कुंठ रुयाः सकय वन च य ग य गं गु य जा रुय ॥ उगु वषगु १ मा ० यनाम विद्याधव
 नः क वि य कूमाय सि मा की क या भः आ का शु वा स ने धू म क वि य कूमाय रुसाः हाना ची न म्मः सि मा स ची न म्म कूमाय रुसा
 या ग आ सा रु य सा वि या भ न जा या गं ॥ उगु वषगु १ क वि य कूमाय या हा वि या हा भ ज व पा उ वा स ना या नाः विद्याधव या गः
 भ व न पू जा या भ रा म्मः गी भ के श्वय ध यः अ गि रु र्ध मा ने न च्छ त यो व ध का वि गि या गं ॥ द या ची क सि या वि या क कू ध क
 ध धि गु व ना के य स थ धि न गु धा न सः स रु या ना स रु या य म शू गु दु ष क रु रु या ची नः थ स सकय य जा या ना वि या
 क म्म रु सा के श्वय च्छ क थू गु पु का य क वि य कूमाय ने वि गि या ग ॥ १ गि से प्रा र्थि ग ग नः कूमाय न धी म ना वि या ध वः

संस्मृतोऽवमादिभिर॥ गगनकुमायस्य विद्याधरा शुभप्रविशतिः दावचकसंदिग्धा गनावना लोचने॥ गगनदायक
स्य विद्याधरा न सर्वसुविस्तरं सम्पादयत्॥ साधुगुरुदायकः शैलाकनाथः अनाथः शैलाकनाथमहाकूटस्थाने॥ सर्वलोकजग
ममनाधिष्ठानं उगुपायारिधकंदयाग॥ संपूर्णमायाविद्यासूत्रसंज्ञः अवसजस्थानं च पूनपयक्तुहिंसाविद्यामभिनदियते॥
महाकाव्यलिकशैलाकनाथः पयक्तुमभिनवायविहकर्मविधिस्थापयत्॥ किमभिनवागदेषस्य वसासंयक्तुहिंसाकर्मया॥
उगुववगुः अनिरुपायान् कुमायधुविचिक्रियासंयतिः विद्याधरा नरसोः सकयराजपञ्जनं पूयगुग्धया आह्लादयकय॥ उगुववगुः कवि
सकुमाययागः विद्याधरायागः आशुमसवोनायना कुमाययागः अगिजसंज्ञः सुखनः राजनयागकयः उगुववगुः दायककुमाययागः
विद्याधरा नरसोः विधिविज्ञावव आह्लादयकतः गथयाधसाः हिंसाधुगुरुगुहकुमायः स्वर्गमध्यपागायनाथः अनाथरुपा
जगतसंसाययाः ध्वसपायः धधिगुमहाएयथायसः सुहहिंसायाः सकलजाकयादयाः यज्ञापायगुः जिनः॥ अधिष्ठानेयायाः
उगुपाययागः अविधकवियाः जिनगवः दयाचोकविद्याः सकयः जिनविवागवः अवसजरुयिधसथधयायधकावियाग
वसकवविद्याविद्यागः हिंसायायगुक्तगजिनमवूः लानः भवगुवियाः हिंसायायगुः जिनः मवूः सकययाकवूः मयध॥

श्रीलोकनाथः स्वः आभयिपगसः तिनः प्रायश्चित्कर्मयानाभविधिकयाभुमाः श्रान्तमानिः जिनेयायमानिः कुंयायजिनः
 जागयाः ईषयाभासवस्वरयाः धर्मकर्महिंसाकर्मजियायधूनचनगुकायनसं॥ साधुश्रुममविद्यामांयः हवत्स
 सर्ववृत्तानुपबोधयनः गगविद्याधयस्यः कर्त्तुं विगुनवीर्त्तुप्रबोधयः॥ गगविद्याविश्वजदकर्त्तुं विगुनदायकस्यमायाभासविद्या
 सर्ववृत्तिगार्थयनः॥ उगवषण्णः हसाधुश्रुममविद्याधयस्यः कर्त्तुं विगुनदायकस्यमायाभासविद्या
 उगवषण्णः विद्याधयस्ययागः कविजकूमायनं कर्त्तुं चायापूकत्यसकतां॥ विधविद्यायागकनः॥ उगवषण्णः सकयविद्यासगमविः
 अधयनं कर्त्तुं विगुनदायकस्यमायाभासविद्यासकतां स्यानाभविष्काके॥ गगविद्यायगुगियदिनेसूत्यनवासनेः गवदा २२
 यकस्यसूत्रसन्ननाधपुत्रगमनदधन॥ यथायथागमनगथागथासंकसुखानेऽगगुविद्यापुकागिननः पुविगुगिदधन॥
 उगवषण्णः विद्याधयस्ययागः कविजकूमायनं कर्त्तुं चायापूकत्यसकतां॥ विधविद्यायागकनः॥ उगवषण्णः सकयविद्यासगमविः
 अधयनं कर्त्तुं विगुनदायकस्यमायाभासविद्यासकतां स्यानाभविष्काके॥ गगविद्यायगुगियदिनेसूत्यनवासनेः गवदा २२
 यकस्यसूत्रसन्ननाधपुत्रगमनदधन॥ यथायथागमनगथागथासंकसुखानेऽगगुविद्यापुकागिननः पुविगुगिदधन॥
 उगवषण्णः विद्याधयस्ययागः कविजकूमायनं कर्त्तुं चायापूकत्यसकतां॥ विधविद्यायागकनः॥ उगवषण्णः सकयविद्यासगमविः
 अधयनं कर्त्तुं विगुनदायकस्यमायाभासविद्यासकतां स्यानाभविष्काके॥ गगविद्यायगुगियदिनेसूत्यनवासनेः गवदा २२
 यकस्यसूत्रसन्ननाधपुत्रगमनदधन॥ यथायथागमनगथागथासंकसुखानेऽगगुविद्यापुकागिननः पुविगुगिदधन॥

चक्रवर्तीनृपाधिपः महडाष्टर्दिसम्यन्नामस्तसाहेः समन्विगः गगः समूपासिगवमहम्यां माहिसिगव्यः पुगदिनं हि सिकातं च
दधरुः ॥ उगवषगुः हे साधुः नृगः कविप्रकृमायं मनसमाधानयानाः ॥ कायायमाजः लोकज्यया कथा ॥ १० ॥ पादि संताजभाकयाग
जगगयानाः नाजायागं भाहयाना ॥ धूगुथाः सकलयागाश्रयाः चक्रवर्तीधायकाः नृपगिरयागः महाउत्साहः संरुकेयानाः ग
द्वेगुपमाकुमनः संपूर्णरुयाचानप्रचुहः ॥ गगः समूपासिगवमहम्यां माहिसिगव्यः पुगदिनं हि सिकातं च दधरुः ॥ मह
म्यादिनं हि साकर्मननं इर्गुगिजायग ॥ गदासो निजयी वीचिमहदग्निः ॥ अथवा कृतः ॥ भीगीरुगमहानंदसूखाद्वारवगित्तिनाग ॥
उगवषगुः दयाचोकत्वगधधसाः अहमिदिनः उपासयानाहिसायायगुरुकागातगमात्रकानधसाधूगुदिनसः हिसायायगु
गातगाधयः ॥ अहमियागुदिनः हिसायायागुवापनः इर्गुगिसननकसलायीधूकयाकाजलसः उगवजसः लोकज्यया
गुगजगकत्वयगमिदूकं अविचिमहादाहगुः हने अविचिननकसीगजशयागनं चानपिंसकयः भीगजशयागमहानंदरु
यागः सुखरुयाग सुखगुगपिजसतं ॥ धधह कविप्रकृमाज ॥ गवः श्रीकृष्णमयधिनमः मकुउवायनारुतं ॥ धयीरुतं स
मपुये ॥ १॥ पुगत्पून्धहतगवः हे कृमाजस्यसूमयनी ॥ गगः संपुष्टिगासार्थवाहं यत्ताकयवानिष्ठंगमनः सिंहलदीपयाज

सीधनंगचक्रि॥ माहिनीकापयुपीनिहसुपस्यः जागानः वा निजातश्चापि यं चैभगजनधोपिकाः शुद्धिनः सार्थवाहाश्च महाज
 नाशुलथिनः॥ उगुवषणैः कयून्मायापयजगम्भः श्रीकयून्ममयधकाधयाः मंकेउचायनयानागुः पुलावजम्बकायाहायाकोग॥
 धगुपून्मायापयजगम्भः कनगजानामकासांयद्रायागः उगुवषणैः पुस्कानयानागस्यंतिः सिंहसार्थपत्नाकयजगन॥ अ
 नः धनहिहसदीपसंः नाशुसियाधनसजने॥ उगुवषणैः भाहुरयांचोपिः कामयूपीरयाचोपिनिः सिंहसार्थकउजागः हनेव
 निजाजसकत्यः चिमरुठभयः वंगालसकत्यः शुलकल्यानसचोपि सार्थवाहः महाजनरूपादिसकतं धूगुधनसजाकपि॥
 उगुधनंयधगः सार्थवाहाश्चजनधोपिकाः सर्वमृत्फुल्लयंग्रामया॥ गगः संपुस्कितसोचलाक्कधयंपुलासयन॥ सिंहलदी
 पआत्मक्काशसीवतिगचक्रि॥ गगः सार्थवाहस्कानयनिकनवनिजाजस्यउपदभयन॥ उगुवषणैः धूगुधनयानाचोपि
 सिंह० सार्थवाहयासकनवंगालः दयाचोकमृत्फुल्लयाहयं हानाचोपि धपनिस्यंनः नामकायगुमगिहमगायकस्यचोनपि।
 धपनिधसः विष्णानाग॥ साक्कधयं धगुनामगजपिकयाग॥ सिंहलदीपसविष्णानाः पुस्कानयानाविष्णगं नाशुसिगनया
 धसविष्णगं॥ गगुउगुवषणैः सार्थवाहयास्कानयनाः मगच्यानागगुयिसमगयागुमृदिरयागश्रीलोकनाधनेः सिंह

सार्थवाह्यातः उपदे भवितु ॥ गस्मिन्निभ ॥ जागिते घयन खा न नूत्वा यः गंग ॥ अन पु वि अ य मिः वावाह सा नू प न सर्व धो जा जानः ॥
गग ४ अ सा नू य स्यां शुः सार्थवाहा य पि ज ना सर्व प श्व ग न ॥ अ स नू य न स मू ड जं घ य नः ६ अ पु वि अ य ॥ ७ गु व व गुः थू व नू या दि
भः च चिं ची ना अ मा त गुः जा कु सि नि स ना य जं र कृ दा या नाः ॥ अ स गि वू नूः द्रा वांः गंग स ना न स क ल्यं अ नी अः व दा ग अ धि क मः
स ज या नू प रू या अः पु जा स क अ अ न ॥ ७ गु व व गुः थू स त या म स सार्थवाहा य पि वा य स क ल्यं स त या म स ची नः थू म स जं
स मू ड ग अ या ना रु जः थ अ गु दे अ स थ न का वि य ॥ गग ४ सिं ह सार्थवाहा ए वि ष्य मि ॥ जा कु सि नि स्ये भा च न प श्व य न ॥ पु ग ल्य
का य न ॥ श्री लो क ना थ स्य पु जा कु मः वि षा ध य न दा य क स्य पु का अ य न ॥ ग थ कू मा य स्यः सू ए स्मि त ल ग नं स्का प य न क वि ज स्य
जा कु कू ल ग द धा ग ॥ ७ गु व व गुः सिं ह सार्थवाहा जा रा याः वि ष्य गं ॥ जा कु सि य नि स्ये न न य न ग या ल रू अ पिः स क अ उ ध
ल या ना थ गु पु का न नः श्री लो क ना थ या गुः पु जा कु र्म के नाः वि षा ध य नं र सौः क वि ज कू मा य या र व स क ना क ना अः थू गुः कू मा
त या गः सू ए न ग नं सी याः थ अ थ स गः व जा वि या रु ज ॥ क वि ल कू मा य थ अ या अ स ह नि ध क च्छा या रु ज ॥ गग ४ न म
स वि षा ध य रू ह सर्वा त्म ना दा स मू य मि ला केः कूर् व कु म ॥ मूर् धि पु द ग नो घा नि द्यु नु वा नु ष्य तु ला क ना थ ॥ गग ४ कू मा

ययथयथस्थानं गमयथः धर्मदग्धनायुकाभयनः सर्ववनचरइः त्वपूवृषस्य आदोभजिपंड द्वाययग ॥ उगुववगुः
 जागवृमायनैः विद्याधयियाग ॥ असपययागजिनं नमस्कावह विद्याधयि जि विमिया नागु सकटां संभा प्ररुयमाय जिगु
 दसस सकत थितरुयायः जिगजनयकने निना थयामे वपि जिगु इ स थ चोः जिं अ धनं जिने वा जधनयायः संसायसः पं
 च ॥ १० ॥ दियन सदां जिहस्यमायधक विद्याधययाक विनियाना अक विरकूमाय जिह विद्यागं ॥ उगुववगुः थूकूमा
 यं ॥ उगु थसगु थसगु थसगु न्यमाय ॥ उगु थस उगु थसः धर्मदग्धनायकनायः जयजनुपयिनि ॥ सिद्यः धूः किसि च
 याः सकययाग उ धायागनं वदाइ त्वं नया चो नकः श्रीकयनामययागुः ॥ प्रापायागु नामकायकायक वितकूमायनं
 बोनात्यजजायाना ॥ गग ॥ विद्याधयस्य वाजं ॥ आयाधनः सुमयव्यत मार्ग ॥ स्थाने अने गयूप पुकाभित न निर्हये आगच्छ
 ति ॥ मम अकुं सहायवः मम नया धनृपमि सुख नमागस्थानं गमयय ॥ उगुववगुः विद्याधययाग वायंवाले आयाधनना
 मकयाः सुमयवयाना ॥ थस ॥ थस अने गयूपरुयाः थयगुपवाकु मकेनाय ॥ निर्हययानायः थयगु दसस सीसंयज ॥ आ
 यः जिने जिगु कु दया चो कस्यागं ॥ सहाययाना जिने या धनृपमि जागरुयाः सुखन चोनायः जिमामया थनयन्य ॥ गव ॥ दा
 यकः कापिधनगपं ॥ आगच्छ गिपस्यते ॥ मनायमनर्हकिः किन्नयसायूपेगीग वायगधर्व ॥ अपसजायूपे नृपत्यदयः

उगत्यकायेन स वेमन्ति। सेन्यादि नृपति संगे भादयस्य गे ॥ उगुवषणुः धूमकवित्रकृमायेः कापितेन गथ आगच्छ मिम
लश्रुमिनेमनीयमयानाः प्याषनहूयाः किं नृपसीरूपं म्यहाजाः गंधर्वस्वरूपं वा मथानाः अथ सजायुषः व्याख्यानहूयाः
धुगुप्रकायनः संपूर्णमन्त्रिः सेन्यादि जागायाग संगे भादयाना भादयाना मिताचीन ॥ गग ४ अतमममक नृपति समावा
जपुकाययगः। आतनामः ममेनहस्य गे ॥ गग ४ र्मा विषाने सदिग नाथम नृपस्काने आगच्छ मि ॥ उगुवषणुः अतमम
नुजागाने सियकाय आह्लादयकयः चैत्रजगुमनहूयकाः धमने सायधायः उगुवषणुः श्वपिषाना ममन्त्रि सदिग
यानाः दधूपिसे धनकजगल ॥ गग ४ हस्य गे जाजे भादमाया समागच्छ मि सर्वसू मजल नभक्ते ॥ मनीरुधनरा
वनः अहामियमो नृप सागस्वर्गगस्थानेन नृमाधिनयन ए विषयः अहो आश्चर्यं गुपस्यं श्रीपयस्वन गयि विधा नाः
महाकव्यैः सहिः पूगीकन्याः अहो आश्चर्यः नृपमूढः महासूदय ॥ उगुवषणुः अतोवर्म नृजागायागः मायाक कायया
चीनः सकसिने सियकधकसू मजल यानाः अमिनेमनीरु वसा ए वः गिथिठ आचर्य धधकद्वरुतः स्वर्गया प्या
खूः मनुष्या मखूः थिजागुजाः र्मा वयं संः सवने महाकहयानाः अमिनेके हयाठ दयका गजः मयहू चो मयिः अः

हा आश्वर्य्य रूपमूखरहायः सुनाने उपमानय मद्र ॥ गुमयवथानरुकेथी । अदिकंः ऊरूया सवानवाकः हाकू सचिकनः
 कसनि कू सवानवाकः सकूथ कूथ चिस्यः सायगुयया पूगुस ॥ सुवर्णयगुलगागः ॐ नुधनूषः आवन ॥ उगुवषगुः पूष
 मिथिकथं कपात्रः अगिनंवाया निदाया कगुमिषा रुसिस ॥ हाय १ अगिनंवानवाकः हा मतस्वानया वान ॥ नासिकाः ॐ
 न्दिवय आवनः दय्यनः अं ह कायदयर्न ॥ मूख उत्पय मागदक विवूकः वयूय सपाग कर्णः कू लुतन सुवर्णयगुहसुः सूक
 लसंरुवगन ॥ सर्वातं कात त्रवनंः पययसाः यके पक्ष पगुसमाने पारका पृष्ट ॥ सा सा ह ह न मा ह स मसं ॥ उगुवषगुः
 आसधा साः उ आ वस्वानः वान मिखाः ऊसकः सायममवाक हवनयाकाः मूख उत्पय मागदक ॥ मनः नागया थ स थ चीनः
 उ ऊ सपनः कू लुतनं जागथ मानेः पूया रुवथ पा हाया व लूथ नूगवस इर मिअ सं पूर्ण आरयनया गु गे ज ना या ची निथ
 त्या गु प ल स्वा न या रुवथं वानवाक गुगिया पा पि ग व सं पि ना चीनः सा पा गु सा या गु । मा ह रु या चीनं ॥ पूनववायं गी ना ददि
 विचाय थग ॥ गु विरुपः अ ऊ । अ प लि अग न्या अ ह रु काय सर्वगु स्त हय थग ॥ उगुवषगुः म्य हा ल गु विचाय या ना ची म
 रु मि स न के गु मिषा क न्ये गु म स न के गुः य वा खा च किं य गु पि थ वा कं मा ह रु गु सा या ॥ ग गु ४ गु म त ॥ गु म त या ल स

वासवकायरातपेहनासनः। एषिवा नमं किस्किआहोदयकयं स्वयं २६ रुमविषानः हं मकिः ध्वमाहमयीमयसनेः संपू
र्णसूचयमयीमयस॥ चिगुविचिगुनः ममनजिगुचिगुहवनयाग ध्वमाहमयीसार्ज्याअपसनाविग्धयनं स्वयः ॥ ससम
अपसनायामध्वसमनकाध्याम ॥ अपसना ॥ अन्यस्कारजसाः सूचयमयग ॥ रूयुगः गधिगुसालवचनः। चिः
गुविचिगुपदकुमः समस्तमिषायास्वादकायधूनः ॥ आगमननसंगमयायः राजपाथः गधिगुसमातलायकं अन्न
कस्वजडागंजागयागीगमूकनाम्याहाजागविनावायधनाद्य ध्वसकटांनः जिमनसातागः र्वसियाकसमस्तपुकायनं
विनालागनः जिमनस्किजमरुय ॥ वीनामिद्वजागाजटाटायाधगाता ॥ वीनायास्वयमषजायास्वयः घंघंजायास्वयनोनाया
स्वयः ध्वमस्वयरावायास्वय ॥ व्यावूनया ॥ ॥ हार्यचिह्नः सर्वहवननसर्कः ममचिह्नहवनः पुनत्युकायपुससयमम ॥
गगः स्त्रीजनस्यंमूखः पप्रपूष्यजसयाचनहृष्टनृपमिहृदयपग्धः कामवृद्धमाहं अतालनृपमिस्यमूषत्वधनस्वदजाय
ग ॥ उगुवधुः गधिगुचिगुः सूनालेग्वमनं हवनयायमरुमः जिगचिह्नहवनं याग ॥ ध्वजियानिमिः ध्वगजापुसं गायानागजिन ॥

उगुवषगुः श्रीरुमयीमयरुयात्वायः पथे स्वा नयाय ससः मिखा मिमका मः अशायमनकाया नूगवसदनं गथसाः कामयायगुमनयाना
 श्रीरुवधययागः धरुका मयाः लया नानंः श्रीरुवधयरुयायया अशायमनकायात्वायसः चयमिपिचायः स्वायचीनं ॥ गगः दिनसन्ध्याः
 कालसंपूर्णपत्रपुवाः पाजिगाधिनः पूगजीसुदागवोददस्व ॥ गगः ४५ लूसाधूमाहमायाममनृपमिथानं अकपूजस्का नंवागच ॥
 उगुवषगुः दिनससधमकालरुस्येयिः दयाचोकः धनसंपतिः दययोगयाः मूखसूद्धिः ग्वचग्वयगयाः सिधायः विद्याः धममाहमपी
 मयरुयागः दुःखविद्याधमः गथः धमसा उगुवषगुः ॥ श्रीरुमयीमयरुः कः जियमिसयाः जिनागाया धनसंअकपूजया धनस
 अयमायथथं ॥ धयायः यागकृतसजनायः काममरु रुयायः श्रीरुमायामयीमयरुजकरुमनकायचीनाचीन ॥ धनपुकायर्त्त ॥
 कूटकामिनीः नृपमिसुहृदयपस्यः असत्यपुपसंसाजस्त्रिहमायाः यागस्य धिजथग ॥ गगः सायानकागिमूखमदनागुपनृपमिका
 मयागीः साचिदेन श्रीरुमायाहजर्त्त ॥ गगः नृपमिमूकामूकसाचिरुयगः ॥ १० दिवावसजः यागस्वरूपसिमाया कूअय ॥ कपन
 नंसुदप्रिरुगमिसाः अशायमनकायायाः नूगजनं विअमयानायः असत्यपुपनैः संसाययाः स्त्रिहमाया धं यागाया श्रीरुः विस
 स्ताययागं ॥ उगुवषगुः संध्याकार्ये सिधा बहद्विथस धममाहमयीमयरुयागु कामनेयागरुयाचीनमनागायाचिरुयानावीन

कय चो गं: हय न्या नाह उग वष गे: जाग या गा क पू या गुरु य ह्य ना अ: वू डिं या अव स प स ध र्म अर्थ काम धर्म गुणि वर्ग रु ल वि
 अ प ज गु थू का सि मा रु द या पु ग य स स्व रू प रु प वि अ न्न ॥ संपूर्ण काम म द या ग ध न ॥ गु म पे पूर् ण व ध न या ना य क ॥ म रु
 ग रु काम गा ग या व स न अधा म स हा व ठ ॥ ग गु ॥ मू ख ध न क: सू ट य न स वा द य: कू ट का मि नी: जा ग वि ना अ ॥ ग ग ॥ ना ज न स्य मा रु
 मा या दृ ष्ट न ॥ उ ग व ष गे: मा कि सि नं का रु ग हा स: ज श म या क रु स ॥ अं ग ल ग म य स का ति न अ नि ध य स: मा कि सि नं उ ग व ष
 गे: दा स रु न प नि: सू ज स नं त्व ज्ञा ना अ कू ट का मि नि सृं द रि मि सा: ना ग या कू ल स म ना ह य: उ ग व ष गे: जा ग नं रु प सां: मा
 रु म यी म य रु त्व ना अ ॥ त्व नं गु नं: ध वा ज नं: इ गं चि नं मा रु रु या अ: मा रु वि ष न दा रु रु या अ: धे र्थ या ना ग ल गा अ: रु ग
 स नं पु का क स नी ना अ: आ लिं ग न या य ग: ग या य रु पं ॥ जा ग या का ना रू प ॥ ग ग ॥ ना ज न स्य रु रु स मा य ग स यी स न प स्य
 ग ॥ उ ग व ष गे: ना ग मा रु मा या म यी ति मि या रू प नं पु कां ग रु या य रु पं ॥ उ ग व ष गे: वि धि जा हा अ ना अ दे वा सा स ची ना
 अ अं न क त्व ज्ञा ग ॥ नि म्म सि या वि धि रू वा ग स रुं के रु ना अ त्व ज्ञा ना अ रू वा य या ना अ ची न: रु नं ध मा रु मा या म यी
 म य रुं धा सा: ना ग या ग काम गा ग म वि स म या कू स्य: त्व नं रु क ल हा ग नं रु क काम गा ग मा रु या ना ची न: जा ग या

धासाः कामगवधयस्याम कामविषहथस्याचानः धनंतिः थुगुपुकायं संवाटयां २ वाचागावधगसः गथारुतधासा ॥ ठग ॥ गग
 माहमाया रूपच्छाविगनः कूमायपुपुकाभिगः कविधनआज्ञापिग ॥ गृ नूजाजं अहममनाद्यभन काममनदिः ॥ गृ नूगोशीसग
 वगस्यपुगः सूधर्मावगिगर्णननगागममः सर्वपत्तचूगमनिमोलावीजकूमायममः कूजसंग छहगुगानृपगिः कन्यहगुगान
 मम ॥ गगः किवाछलगः निर्मिर्दुनममनसिभहाच्छाविगः छहगुगाक न्यहगुगासमासयसूषनजाजलगरत्वाः
 गवनुकान्कवाछलग ॥ उगुवषगुः माहमयीमयरः पूपगायना कविजकूमाजं यागुपुपधसयानाः कूमायनं आह्लादयकजं
 उगुवषगुः ठग हेवागाजिः जिहसांः व्याधूनमटूः अपसनांमधूः चं ठगः साच्छगसग्यपर्थजागायापुगुजिधूकाः सूध
 म्मीवगियानियागर्णनंजमरुणमः जि ॥ दयाचीकसकजपत्तचूगमनिदुमः विजकूमाजजिधूकाः कूरसांः पापिह
 दाहानृपगिवाजाचंः चं किजाः जिहाच्छगः उगुवषगुः चूवाछलगयाययाहने ॥ जिगः गायनाच्छगकंः कानंधासा
 दाहजि ॥ किजाः निममिथस्यासूषनं जाजलगयानाचीठगुचंः थउयाकचाः लगयान ॥ ॥ गथचं लगया
 यादयिअथअधर्मिपापिहर्जनः विनांपनाधः निजधषः वातकजः जिगगथिग्वइद्वसमूडसकूगिकलः चम

हापापिह न पुनर्वीलः ममः जिकर्मनं ध्वरः त्वसमूह गप्रयानाभजिअयधून ॥ गगः धनं लिच्छु पापिह चान्यात जिला हा मि
सजागधकः धालं ॥ गगः पुनर्वीजः रुद्ध याय धासा घावरूयूः पुकाभरूया गिसकस्यानं सिरू ॥ उगत्युकाप्रजव्यनः आहूय
धविग पस्य गगः आहूय धविग नवपायस्यः आचन एव ॥ गगः पूर्व विद्याधव वचन दावक दय सं सम समूपासिग
व्यमहृम्यो हि सिग वंः च पुनः अस्मिदिनमहृम्यादिनन एव ॥ थ्रियानिगिः ग्वपग यानाजियूः ज्ञापाया थं कयां चानः
गथ धासा आहूय रूयाः नवपाय ज्ञायागः स्याय गेनः उगु वषणु ॥ ज्ञापायागु वचन मनाभः कविय कूमाययाः नूग
यस धंदा रूलः उपासनायायमायः अहृमिषूः हि सा याय मने अधाज ॥ हाकनं ॥ थउ यादिनमहृगजपा ॥ पुनर्वीज
आहृमयीरूयाभः से ल गविय धाया ॥ जनुयूयः अणु ॥ जाजायागत्व हं चाजा नाअधाज गथ धासा जिग चैः ज्ञापा रूसा
सिरूया थ्रविषा रूयाभः स्याय धक रूअ म् चै धक धया ॥ त्वरु चाजा नागिया आचका विल ॥ उगत्युकाय जा गिस
मयः प्राध ॥ जाजा हि धक का स्य रूअ म्ः गिका धावीः दाहृमाचका ॥ सामा छ ॥ चक्र वर्त्तीनाजायापद वार्ग ॥ १॥

गगुः प्राग्वत्कायः मन्त्रिपुः मूखकविप्रनमः हमायात्रपच्छात्रिगनः कविप्रपक्षप्रिगनः सर्ववाक्काशविधानस्य संवा
 दय ॥ गगः सर्ववाक्कासंपूर्णसामागस्तानं मन्त्रिपुविभय ॥ उगुवषगुं संगिषूद्रमंत्रिपुमूखसकथमूनकाः कविप्र
 कूमायनः मारुमायामयीमयरगाजगाभः साच्छुगः कविप्रपक्षप्रयानाः सकयदयाचोक्तवः श्वपिषामंनियोगः कना
 अजाहादयकनं ॥ उगुवषगुदयाचोक्तवः धूंस्पयिथअमामयाथसरपिषानअन ॥ गगः सूधमीवगीसमूपाशु
 ल्यसर्ववाक्कापुवाधयाः कूमायस्यवचनं सूत्वा ॥ गथसगिसूधमीवगिः पूषध्विगीसमन्त्रिगं ॥ गगुकापिल्यनगजसमा २८
 ताकं पुविभगिपुलासयन् ॥ उगुवषगुः सूधमीवगिजानियाः कृणन्थीनासकयर्वाक्काटवकनाभः धयः कविप्रकूमा
 यः कलधालयापूयः धधकाधयाः धयः धूगुत्यमाप्रः नाविष्मगंः धधसंसाजयाः मोधायकाविष्मकक्षः पून्य
 यागुपयाकुमंशाहनंसेरुकेधनने ॥ धनर्कापिल्यनगजसः सास्थं धअगुगजपिकयाविष्मगं ॥ गगुगीमकसमात्ता
 वः दभयथस्यपूयकूमायसूधमीवगिवचनं सवादयसंपुमादिग ॥ सूधनवासय ॥ गगरावाक्षरिष्यकसमागम ॥

गगः दायकस्य पूर्वद्वयसमस्तथाः जागर्ह्यमाह वसन ॥ १ ॥ अथ शाशादृशगजिजं अग्निनसस्कातः प्रयाग ॥ ३ ॥ उगुवचगुः ध
अग्नीसा लयमानरुग्मः दग्धार्थजागया कायपूगुः कुमारसायाः मामनं ॥ ४ ॥ काययाः द्वायसायाः आह दयकतः ॥ ५ ॥ पूगु
घनं वाभयानाचा ॥ ६ ॥ उगुवचगुः जागर्ह्यमाह कयदनाभाचान ॥ ७ ॥ उगुवचगुः दायक कविज कुमारया झापागुद्वयमनाभा
जागर्ह्यमाह दयाभाः दारयागनिबृयादयाः सजिजसः अग्निनसस्कातमयास्यः आलसकादृशग ॥ ८ ॥ गगः प्रायसिद्धादियं
विधिपूर्वकं कृयाकर्म समाचर ॥ ९ ॥ गवगुहदिनविधिपूर्वकियाकर्मविधिस्थापय ॥ १० ॥ उगुवचगुः धूगुपापभाकयाय
गः दिपकायविधि कृयाप्रापा कृयाकर्मयाना प्रायसिद्धकाजहने शुहदिनसायाविधिपूर्वकयानाः कर्मविधि थापनया
नाभाचान ॥ ११ ॥ गगः धनं लिक्विज कुमारनं शुहथिजलग्नव्यजास जागर्ह्यमाह कयाभाजादृश ॥ १२ ॥ उवदायकस्यः सूधाया
निवहृनिबृत्वाः पापानि निग्यं समदाचरं न ॥ १३ ॥ अथ गिपाथष्वपि गेचन काद्वानि जुह्वानियय बुजगु ॥ १४ ॥ उगुवचगुः
ध-गुपुकाजं कुमारया गीर्णपिकयाति ॥ १५ ॥ किजायाग असंख्य इद्वसिकाः समूदसकूटिनच्छायागुचययानाद
खनकजः पुनर्वाः धूगुपापसचययायाः लगनयाग इद्वनयाः अलाजमन जागर्ह्यमाह नजकस वासजाग ॥ १६ ॥ अहृतिद्वः

जानादि ध्वजलाजमनजागाः भवमद्वूः ध्वपापि ह देवद रु धूकाः ध्वक वि वीजजागं ग्वलागा जागल छी जा छल गगया
 नागः अकालमृग हयागः गुगु वधपापनः नजक वासरुतं सरुमु वर्षपर्यन्त ध्वपाप लगया गगः जागलं ध्वया
 लगनः पादांगु ह स घाव रुतं । जनु पनि स कल्प कल्यान्त उ य रु स नः ध्वमं या नागु कर्म उ य म रु गः वि ना लगन ॥ जमा
 बर्क कु म प वि स यः प च मां प ग्धा धा ग रु त ज ल ग यू गु व ग र्हा न थ पि ॥ गे से ना ना व स प वि क प्रेः का य पा गे ख रु कंः क त्या
 पा पे व पि न पू पू षः क र्म श ष ज ल गि ॥ उ उ व ष गेः ज न रु याः क र्म स ष ड् ग थ अं न ग पू पू ष प नि स्य नः । लग या य मा वः ज न म प
 य य ना या अ क म नं या क ऊ गंः रु त सः ज ल सः सि मा सः ला ह गे स ग र्हा वा स रु व ध ग ना या ग र ॥ उ उ व ष गेः ना ना व स नः अ य
 स नः श लि य थ यू य सः ल ग या गः ल ग म या स्य क र्म उ य म रु जेः स ध र्म च ल या य मा यः ध र्म न स्व र्गः ध र्म न सृ त्व ल गः पा प नः न
 ज कः पा प न ॥ इ त्व ल ग स ध र्म क र्म या य मा तः स ध र्म नं नि र्वा न प द मा रु जा यू रु व ह अ ग्धा क ध क आ ह्य म हा वा ज अ ला के थ थ
 सि या गः अं न क ज ल नं ॥ ॥ स त् सृ त्व वा च्छा या ना ग द ग्धा कू ग ल क र्म गा ज गा गः मि शु क र्म गा य गा गः पा प क र्म गा न गा ॥
 अ रु कं डी य ग ने वः क र्म का पि के दा व नः सा मा गी प्रा प्ता का तं च रु त नि त्व तू द दि ना ॥ ग ग ५ उ ग त्स ल स न्नि स्ति त्वा ॥ ॥

२२

दीर्घनत्व ॥ सद्धमसमाचर ४ मूनिग्धवस्य संमूपाचर ॥ अविन्दुः दन्दुर्वपृथिवि विधायिगः स एतस्य समूपाचिगः ॥ ७ ॥ गुववः
थमेयानां कर्मः धर्मः पापकर्मरूपताः ॥ ८ ॥ कर्मयानाः ॥ गगमया संकुसमः ॥ ९ ॥ वीथरुया ॥ १० ॥ कर्मरुतलयरु
तः ॥ ११ ॥ नेपिमहायाज ॥ १२ ॥ कथयिगुपयेपयायावन्त्यना ॥ १३ ॥ हिदुताक आनंदादि सकलस्य नं द्विदिकर्म धायपयार्थं तं च
नायायमज्जुग धक एवपवान ॥ १४ ॥ गुजवस्य संथस एतस्य चो न चो न ॥ १५ ॥ दिर्घनत्व ॥ १६ ॥ वृजवाजिसंन्यासि सर्वमसं चय
यानां चो ह ॥ १७ ॥ नं ॥ १८ ॥ गवानया के ॥ १९ ॥ न ॥ २० ॥ क ॥ २१ ॥ याः पाविस एतक पूया दंद कथिनं पृथिस चूया ॥ २२ ॥ गवानया के वि
किः ॥ २३ ॥ ग ॥ २४ ॥ गवान ॥ २५ ॥ गवान संसाव सर्वथा कद हिना स्वस्व कर्मरुतं स्वकर्मरूपं सूर्य ॥ २६ ॥ गगन ॥ २७ ॥ गृन्नाः
गगव किं किं कर्म समाचर ॥ २८ ॥ गगवन्नस्य वजकाय सर्वगु एतद्रुतं संपूर्णः ॥ २९ ॥ गगुगलद्रुतं संपूर्णः ॥ ३० ॥ असिगिवंज ॥ ३१ ॥
गगगिरुवनं व्यापिगः ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥ ॥ १०१ ॥ ॥ १०२ ॥ ॥ १०३ ॥ ॥ १०४ ॥ ॥ १०५ ॥ ॥ १०६ ॥ ॥ १०७ ॥ ॥ १०८ ॥ ॥ १०९ ॥ ॥ ११० ॥ ॥ १११ ॥ ॥ ११२ ॥ ॥ ११३ ॥ ॥ ११४ ॥ ॥ ११५ ॥ ॥ ११६ ॥ ॥ ११७ ॥ ॥ ११८ ॥ ॥ ११९ ॥ ॥ १२० ॥ ॥ १२१ ॥ ॥ १२२ ॥ ॥ १२३ ॥ ॥ १२४ ॥ ॥ १२५ ॥ ॥ १२६ ॥ ॥ १२७ ॥ ॥ १२८ ॥ ॥ १२९ ॥ ॥ १३० ॥ ॥ १३१ ॥ ॥ १३२ ॥ ॥ १३३ ॥ ॥ १३४ ॥ ॥ १३५ ॥ ॥ १३६ ॥ ॥ १३७ ॥ ॥ १३८ ॥ ॥ १३९ ॥ ॥ १४० ॥ ॥ १४१ ॥ ॥ १४२ ॥ ॥ १४३ ॥ ॥ १४४ ॥ ॥ १४५ ॥ ॥ १४६ ॥ ॥ १४७ ॥ ॥ १४८ ॥ ॥ १४९ ॥ ॥ १५० ॥ ॥ १५१ ॥ ॥ १५२ ॥ ॥ १५३ ॥ ॥ १५४ ॥ ॥ १५५ ॥ ॥ १५६ ॥ ॥ १५७ ॥ ॥ १५८ ॥ ॥ १५९ ॥ ॥ १६० ॥ ॥ १६१ ॥ ॥ १६२ ॥ ॥ १६३ ॥ ॥ १६४ ॥ ॥ १६५ ॥ ॥ १६६ ॥ ॥ १६७ ॥ ॥ १६८ ॥ ॥ १६९ ॥ ॥ १७० ॥ ॥ १७१ ॥ ॥ १७२ ॥ ॥ १७३ ॥ ॥ १७४ ॥ ॥ १७५ ॥ ॥ १७६ ॥ ॥ १७७ ॥ ॥ १७८ ॥ ॥ १७९ ॥ ॥ १८० ॥ ॥ १८१ ॥ ॥ १८२ ॥ ॥ १८३ ॥ ॥ १८४ ॥ ॥ १८५ ॥ ॥ १८६ ॥ ॥ १८७ ॥ ॥ १८८ ॥ ॥ १८९ ॥ ॥ १९० ॥ ॥ १९१ ॥ ॥ १९२ ॥ ॥ १९३ ॥ ॥ १९४ ॥ ॥ १९५ ॥ ॥ १९६ ॥ ॥ १९७ ॥ ॥ १९८ ॥ ॥ १९९ ॥ ॥ २०० ॥ ॥ २०१ ॥ ॥ २०२ ॥ ॥ २०३ ॥ ॥ २०४ ॥ ॥ २०५ ॥ ॥ २०६ ॥ ॥ २०७ ॥ ॥ २०८ ॥ ॥ २०९ ॥ ॥ २१० ॥ ॥ २११ ॥ ॥ २१२ ॥ ॥ २१३ ॥ ॥ २१४ ॥ ॥ २१५ ॥ ॥ २१६ ॥ ॥ २१७ ॥ ॥ २१८ ॥ ॥ २१९ ॥ ॥ २२० ॥ ॥ २२१ ॥ ॥ २२२ ॥ ॥ २२३ ॥ ॥ २२४ ॥ ॥ २२५ ॥ ॥ २२६ ॥ ॥ २२७ ॥ ॥ २२८ ॥ ॥ २२९ ॥ ॥ २३० ॥ ॥ २३१ ॥ ॥ २३२ ॥ ॥ २३३ ॥ ॥ २३४ ॥ ॥ २३५ ॥ ॥ २३६ ॥ ॥ २३७ ॥ ॥ २३८ ॥ ॥ २३९ ॥ ॥ २४० ॥ ॥ २४१ ॥ ॥ २४२ ॥ ॥ २४३ ॥ ॥ २४४ ॥ ॥ २४५ ॥ ॥ २४६ ॥ ॥ २४७ ॥ ॥ २४८ ॥ ॥ २४९ ॥ ॥ २५० ॥ ॥ २५१ ॥ ॥ २५२ ॥ ॥ २५३ ॥ ॥ २५४ ॥ ॥ २५५ ॥ ॥ २५६ ॥ ॥ २५७ ॥ ॥ २५८ ॥ ॥ २५९ ॥ ॥ २६० ॥ ॥ २६१ ॥ ॥ २६२ ॥ ॥ २६३ ॥ ॥ २६४ ॥ ॥ २६५ ॥ ॥ २६६ ॥ ॥ २६७ ॥ ॥ २६८ ॥ ॥ २६९ ॥ ॥ २७० ॥ ॥ २७१ ॥ ॥ २७२ ॥ ॥ २७३ ॥ ॥ २७४ ॥ ॥ २७५ ॥ ॥ २७६ ॥ ॥ २७७ ॥ ॥ २७८ ॥ ॥ २७९ ॥ ॥ २८० ॥ ॥ २८१ ॥ ॥ २८२ ॥ ॥ २८३ ॥ ॥ २८४ ॥ ॥ २८५ ॥ ॥ २८६ ॥ ॥ २८७ ॥ ॥ २८८ ॥ ॥ २८९ ॥ ॥ २९० ॥ ॥ २९१ ॥ ॥ २९२ ॥ ॥ २९३ ॥ ॥ २९४ ॥ ॥ २९५ ॥ ॥ २९६ ॥ ॥ २९७ ॥ ॥ २९८ ॥ ॥ २९९ ॥ ॥ ३०० ॥ ॥ ३०१ ॥ ॥ ३०२ ॥ ॥ ३०३ ॥ ॥ ३०

सूर्यमितायुर्नसंस्कृतं पाचां कृत्वा गा वं जननेन । इति यमानरुणः स्वर्गमिध पातायः भवसंमदः ॥ ६
 वागिदेवदेवजसूरत्वं वज्रकायाग पाषाणसहावनकुर्यग ॥ देवयादेवियाः देवया मनूष्याया संमदं च तथा
 तया सपियसत्त्वा रुतनं कयकलनं गथा घातमस्त ॥ ययनु कर्मवशा सनं सज्जक उग देवनममाज्ञापिग ॥ एगवानू
 वाच ॥ साधुगुणमहाविह उका गुचिरु समाधाय गिपत्तस्य गय नंगत्वा उधा प्रधनामवुर्ह समाचय ॥ ७ गुववगुः कर्मवशा स
 नः संज्जक मागुः घातयः हेतुगवानः जिग आह्लादयक माय ॥ ८ धधध कर्मगुत्वठ नाः एगवाने आह्लादयक यः धं देव्या वासि
 कः एगमानिजनवः कं नरुजसो उका गुचिरु यानाः उज माय वृद्ध धर्म संघया भयवशा नाः अहमिबुर्ग चययाना ॥ ९
 भमायहः दिर्घनामः ॥ गगा विचिमहा नयक संस्कृत धयगु मर्हतिः सर्वप्राणिपुत्रा धय ॥ १० गुगति नं बुद्ध जाग समाचय ॥ श्रीता
 अश्वत्थस्य आह्ला ॥ कूमायस्य गुा नचिरुः अहृशागास्य भीचयग ॥ ययनु मा ० यस्य वचनपिचि नयग ॥ समूयासिगव्य
 अहम्या हि सामा विधया ॥ ११ गुववगुः श्रीकृष्णमय नं अविचिनयक स सक एने पञ्चा याना गजपिकयाः सकयदया
 चौक प्राणि या जिवया आसायागः उधा यय यागः ध्वरू नृनिस्प धूग अहमिबुर्ह चययाना श्रीता कर्मवयागु आह्लाठ ना ॥

उगु वषगुः कविप्रकृमात्रनेपुन चिह्नं रुपायः दारुयागुः हि सा कर्मयागयास्थं लिः लिपनसः विष्णुधर्मीयागुः वचन आह्लाद
यकाहगुः मन्त्रमनायः उपासनायानाः अहमिषून् हि सा धयाहगु वृद्धयसया वृद्धयमयास्थं सात्मनका ॥ अं हं काजी
रुपाय धनियादिनस अहमिमत्तूराजपाय अलात्मनका दारुयागस्याना वित्तं ॥ पवनकुडू मरुदरुपाय अहमीउपासक
मीमयाग ॥ धनं नजकस लगयाग ॥ गगनं सगायस्य चजमजन्मा रुजपा लागि पागदभाकू अलकर्मकापिगः चतुव
ईधायिगः पुनत्पू लपुलावनपविलं कायभाधनं सर्वपापदयं ॥ वजकायगु द्वचिह्नं एव ॥ उगु वषगुः पुसं गापचाया
अः जमजन्मा रुजसं पुलागि पाप आदि दभाकू अलकर्म आदि गाजगायः मेगिकनू लामूदिगा उपाहाः चतुर्वेध
त्यानाः धुगु पू लयापुलावं पू लपुविनकायभापिप्ररुया दयाचीक पापरूनाय वजकायभापिप्ररुयाः केवल्यगु
द्वचिह्नं रुपाय ॥ अदलादानं सर्वपापनिमेगि बुद्धिनाज समाचजः पुनत्पू लपुलावनसर्वदुःखकापिगः चक्राक
पातिपाद ॥ सर्वसत्त्वा एव वतः मिध्याकामपपि वर्जयत् ॥ उगु वषगुः अदलादानधयागु गाजगा लाकयाग सिमहग
याः अहमिबुद्ध चयाग ॥ धुगु पू लयापुलावं दयाचीकदुःखः रुनायन पाजाहनसंः पापिसदाः पचि आजच

बुद्ध्याभिलेः दयाचोक्त अहं वयदाः मिथ्या कामरूपेः भालनाच्छाया ॥ बुद्ध्याजनात्कृतं सर्व संसायनाहं समये विचिन्तय ॥ उग
 त्पूज्यपुलाव्यन सर्वभागनाभनं पप्रिपूहाग आसु भववर्धय ॥ सुवर्णसमाने ॥ गगनमृषावादपप्रिबर्जय ॥ सत्यवादि बु
 द्ध्याजकर्मनात्कृतं गगद्विषमाहनाभय ॥ उगवषण्णः ॥ थुगु बुद्ध्यानागुदं वे सकयदयाचोक्त तावपाय ॥ थुगु पूज्ययापु
 तावनं संपूर्णभागदूनाभनः ॥ अत्रियथाहरयाः आसु वधिरयाः लूयागुवर्णसमाने धिनाः ॥ उगवषण्ण रुसगाषट्पाय
 गुभायनाभसत्यवादिहरयाः ॥ अहमिबुद्ध्यानागु पूज्ययागद्विषमाहनाभरयादूनाभने ॥ दनं अगित्याउगु अमि
 सात्कृत्यः नाहाकृत्यः जिह्वाभरयाः ॥ अतिनंकीमतसूनुवगमहीयगु स्वयरयाभले ॥ पुमादपापसाधर्मसमाधाय बु
 द्ध्याजसमाचवात्पूज्यः सिद्धयथापवाकुमंधर्मगु वसं पावय ॥ अकाप्रियिनगजयः ॥ मूयवासकर्मनात्पूज्यः
 इवीकूनुनिष्ठाकयसमवर्ण चतुदण्डकसंपूर्ण ॥ दनं विवसरयाभ धर्मसं समाभिवनयानाभः ॥ धर्मदयागु पूज्य
 सिद्धयाथं पवाकुर्मदयाधर्मनेगुननं पूज्यरयाः ॥ दनं ॥ अवयसगजनमयास्यः ॥ अमनिहयाजाः ॥ धर्मदयागु पूज्य
 संदापस्वाधः चंद्रमायाथः ॥ गुगुगुवर्णरयाः ॥ पियपूदं ननं पूज्यरया ॥ हास्यनास्यपुकाभिनदअदिजं ॥ गगनसर्वा

लेकात्तरविगः पूर्वमाहात्म्यं श्रुत्वा किं प्रमाणेन वरुके समाचरे ॥ उक्तं न्यायान्तराखन जीत स्वयं यः शुभधनुः
आकं ० दिय शुद्धात्मा सगुण संपूर्ण ॥ उगु वषट्ठः ॥ अगु धेयसः गविगु पुमाने गजधिसा ॥ अगु गजः दधदिग
संघजानं ॥ पत्रधिकं धिना चीन ॥ उगु वषट्ठः ॥ गिसाने गिया प्रागु पुनो वषयागु अ स गं पुनाः स्वाचमाजा का प्राया
जाने जागयागुः शुद्धात्मा किं गया मायगु पुमानेः वषट्ठे च यया नागः ॥ धूगु पुन्ययाकः अनूला वनेः वोजानाः शुभं धवा
सनादयाः ॥ गिरिगु मिट्वा रुयाः शुद्धात्मा रुयाः सगुण दया चीक संपूर्ण रुया ॥ नृत्तगीत वाघः पत्रिवर्जित ॥
उक्तं चिरु शुद्ध संपुनः ॥ उपाखन वृत्त कर्म नात्पुला वं ॥ सूत्ररुर्न संरुगः दिव्य रूप गे रु पुका गिन काय ॥ उगु वषट्ठः ॥
प्या पुन ह्ययगुः मेरुधगुः वाजन धायगु गात गागः ॥ उक्तं चिरु यानागः ॥ शुद्ध आत्मा रुया उपाखन वृत्त याना धर्म दनागु
पुन्यं वरुर्न पुन रुवः केवल्य सर्व वरुने गेज पका गरुगु सजित ॥ ॥ हं नं अगि गाजागः आसन गाव गागः सेगु
रुगु शुद्ध चिरु यानागः ॥ उरुम वृत्त च जल पा पुन्य न ग विगु रुत धासा ध क विल कू माय याग ॥ प्रासन गिय त्तासनः
स्वर्ग मय पा गासासनः ॥ विष्णु वृत्ता वृत्तासन प्रापाग ॥ उगु वषट्ठः ॥ गविगु आसन धासाः वृद्ध धर्माः संघ आसन ॥

स्वर्गमय पागाजं सातः विष्णु आसनेः बुद्ध आसनेः महादेव आसनेः धर्मि गुरुत्वान्न ॥ भवने मित्र यथा यम हः स्त्रिया आ
 सने जाजो जमा न ऐग यागं ॥ नमः नमः सस्य समूह पप्रत जं किमूदा खनः सर्वता कपाता चः गुग्गुमा नापि नाजं ह्यगु नागु
 गि सर्व कृगा जं सि नमस्कृत्वा ॥ नमिगु बुद्धा रुम मोती उषी वचूग मतिपुग्गु उच्चु अिय सामान्य सर्वता कस्य दर्शनं
 न ह विष्णु गि ॥ उ गु वषगुः दुग्गु न्ध चीना जः ॥ एज ना याना बुद्ध दना चीन सक ज दया ची कला क पाव यां न नमस्का जया
 नः गुग्गु यागं मा ना यागं पि ना व वा यागं ज ह दार किजा धम धा का पि पि न नं नमस्का जया ना ज नमिगु रू या जः उ र्द
 मगु व र्द स च य या ना गु पु न्ध गिल स ॥ उषी वचूग मति दया जल विश सनं अ गि उ च अि न रू या सक न अ क या द र्ध
 नम ना के ॥ उ छिरु जेः अ गि हा कू काल व न्धः च के न ला क स्य ॥ कू लिर स रू या जः क अ संपूर्ण ॥ उ गत्तु एत दू न द अ कू
 अल पू न्ध पु ल वं उ धा व ग ना म बु भा रु म ॥ गु नू दी र्घ न त्व ॥ गु ह्य ए कि पु ल व स्य द अ कू अल च्छा पि न ॥ गि न त्व स्य अ य
 न ग स्त्रा प य स गु न ल व ग सि स्त्र हा संपूर्णः हि सा न र्ध न प पि न ज क ज ना त्मा मू दि ना ए व ह विष्णु गि ॥ उ गु वषगुः धू पि
 य र्ज नं पू य रू या द अ कू अ य या गु पु न्ध या पु ल व नं उ धा व द वृ ग या पु ल वं ॥ उ अ दी र्घ न त्व गु ह्य न या ज ए कि ए व

मि

या नागुपूने दग्धकृमय नागनाग यत्न या सत्र नगना कन पिनि गम फल वम गस्थ म्द गयाः मन चकं काः हि सा गात्र ना ॥
काय मायः के वरु के वृत्तात्मा रुया म्द दि नाग वया नाग चो न्य माय ॥ अष्टाग संयुक्त बुद्धि जाग समुचय ॥ उगत्पू न्ध पु रा धन
जन्म जन्मा क सर्व पाप दुय सर्व शु एत दु न वज काय निर्वान पद म्द ॥ उग व वरुः च्या गा या अंगं संरु करु याः अष्ट मि वृद्ध
द नागु पू न्ध थूगु पू न्ध या पु रा वन जन्म माग व सं सं पूर्ण पाप रु नाग ति गु वरु न र्क र्क रु या वज काय अत्रि प्र रु याः
निर्वान पद नागः उग ॥ दि घ जटव ॥ संज सि ॥ आम द लुक थिरु को धा ज न्ध या ना नः बुद्ध चो नी मरु ॥ चरु वृ म्द वि हा
जा धनं काय वा के चि रुग्ध ध य आ चा व निय म नि ह्य धा त्रि ग न बुद्ध चो जि ॥ गग ॥ म्नि ग्ध तस्य वचन म्द न्ना दी घन त्व ॥
स्य पु सत्र चि रु ए व अरु के र्ण वरु प रु सो रु सं द दु पृ थि प वि गज ॥ उग व वरुः चरु बुद्ध वि हा ज ध व ज पं स त्रि ज व
चन चि रुग्ध धन या नाग आ चा व या न्ध म नि ह्य या नाग ध य या नाः ति रु रु यी ॥ उग व वरुः एग वान या गु वचन उ
नाग दि घ न त्व ॥ संज सि न ॥ पु सत्र चि रु रु या ॥ रु स चि मि स तं तं जा य का ॥ चो नाग ना हा गं ॥ ना चो ना
गु क थि रु मि स गा व गा ॥ एव द दु के धि नं चू या य ॥ के वरु रु रु यी रा रु को रु या चो न ॥ उगत्पु का ज प वि चि

किं न कुतः लिख्यते न विन्द्यते संवादयत् ॥ हे संवृद्ध एगवन्न जगत्स्वामि अथ यत्पजीवताममः गवशु
 प्रभवने ॥ वाधिमन्त्रयनसपूर्वगुणत्वस्य भवन्ममः स्वार्थपमार्थसिद्धिकावर्तः वाधिल्लानप्राप्यते पापपूर्वम् ॥ न
 मोदनायाया स्तगुरुकृत धावनसमावय ॥ ७ गुववगु थगुपुकारं मेननेचिह्ननायानाः नास्तगस्तगा जपपाज एग
 वानयागः पात्रिसलोकपूयाविनियोगादिर्घनंत्व ॥ हे एगवन जगन्नाथ स्वामिगुरुधायका धनिनिस्थजिव
 दगलजिगुरुकृतपातयागभवनयाययव वाधिमन्त्रयनसहाविहासमध्यतप्रगुणत्वेयाभवनमभननाजिः
 धयागुयायकोजलसः वाधिल्लाननायनिर्मिर्गिनपापदेभनायागां अंभयायनं संरुगनधाययानिर्मि
 र्गिने कनपिनिग वृत्तचत्रयपमेना ॥ हे सर्वहृजापन्न ॥ हे गुगुगयनमभ ॥ जिधकात्मनकेमातः निश्चयनं बुद्ध
 यागवययाययत्ता ॥ प्रातिहिंसायजसा हवनानचतु बुद्धविहायः कृदुपमादाविकातरं नगधनूयपनः वल्लभं
 कातधायनपयिगज संगीगनृत्वायउवभयनादियपिगज ॥ ७ गुववगुः संपूर्वप्रातिजनपिगहिंसायायगु
 कनपिनिगः हे अयायगुमयास्यः चतु बुद्धविहायसधययासाः वचनेगाजगः अवेवसलजनयायगुः अंभगुः

नस्वागुनेहपनयागुःमिआषासगनंपून्धगुनेमावगागःकेवल्यविहायःम्यहायगुःम्याषूनरुयगुःमागासदन्यगुःधवा
कंचगे॥केवलासूक्राहमिबुलुधायिगेःहृगवज्जगच्छासा॥हृगवन्सर्वरुनाथ॥गुगवविधिकथगेममःकस्मिदि
अचयक्रानिउपवायसमस्तममेनसेवादये॥उगेवचनगुगुगो॥हृगवानूवाच॥केवल्यसूक्राहमिबुलुधयेयायःहृ
गुगुहृस्वामिःदयाचोकेसर्वरुनार्थधयकाविष्ककप्रचयधायंथूकेयाविधिविधानसकगावजिगकन्यमातवाध
धयगुःगुगुनूदिनचययायगुगुवःउपायगथचूचूतःदयाचोकेजिगकनाविष्कयमायथधधकधगुवचनठ
नाहृगवानूवाचदयकेल॥साधुगुगुमहाहागःउकागुसंजुफःगावदादोस्त्रानध्यानसमापन्नाःगुविशितचसंपूर्ण
सामनावांकायपिपूवयगु॥पुतिदिनेजथाःअथवाःगुक्राहृम्याकियाकर्मबृहपतुवगुगुमहा॥उगुववगुःहृमहा
हागःठ॥दिर्घनटव॥उकागुचिरुयानासंजुस्तमागुःज्ञायांहरणीर्थसमस्तानयोनाजपध्यानपूजाएवयायःका
यवाकचिरुहृवयानागथगेगुमनावांकायपिपूवयायमाय॥द्विथंथगुदिनअथवासूक्रपतुयाअहमिबूडू

क्रिया कर्म यायः कुषू पञ्ज याय सु महा उ ह म ॥ अह मि पु मि दि न पूर् ति म थ वा पु मि प दा ह मि अ ह दि ने क्रि या क र्म
 समा च य ॥ च पु न ॥ य थ स कि नू सा य न गि य त्त्र अ य न ॥ उ ग व ष ण ॥ अ ह मि षू दू नि स्थः पु नि षू दू ग क षू ह न ॥ पु मि प दा षू दू
 नि स्थः अ ह मि षू दू ग क षू क्रि या क र्म वु र्द द थ म हा उ ह म ॥ ह न ॥ य थ स ग ति अ नू सा य ना न ॥ गि य त्त्र या अ य न अ न्य ॥
 ग ग ॥ वि हा य वा गि य त्त्र स्का भ वा ॥ म थ वा गी र्थ स्का भः न दि स्का भः सू उ ग म नु या वा गु ड ग हे वा उ ग र्म र्व स्का भ वु र्द जा ग सु
 मा च य ॥ ना व दा दो गी र्थ ज त्त्र ग व त्त्र ॥ मू णि का ले प्र य ॥ सू ग ध ग ल सू ग ध पू ष्य जा जा उ ग स म र्प य ॥ १७ उ ग व ष ण ॥ वि हा य
 ह रु यः दे व या क्रि या न ह रु य ॥ ह न ॥ गि र्थ स्का भ रु तः दू सि ह रु यः सू रु स्का भ ह रु यः मं लु प ह रु यः उ ह रु यः धू पिः सै र्व
 स्का भः उ ह म ग व रु या य ॥ प्रा पां गि र्थि नाः य व न ग व ल नः चानः व ॥ सू ग ध ज त न स स्ना न या यः स्ना न अ कृ ग ता य य
 हा वा वि य ॥ न व ज त्त्रा दि सू व र्ण दि अ ह धा गुः म थ वा पं के पंगः म थ वा पू ष्य चूर्णः धा न्या दिः पा षा ल चूर्णः साम ना वां चा
 पू पि ग न ॥ गी अ मा घ पा ग म हा म लु तं ति ष्ठ ग ॥ ह न ॥ न व ज त्त्रा चूर्ण रु यः सू व र्ण चूर्ण रु लः अ ह धा गु च ग याः ह न ॥ पंच ज
 ग रु यः ह न ॥ पू र्व चूर्ण रु यः धा न चूर्ण रु यः धा ना स रु यः धा म ना वां चा पू य या ना ॥ दे व ग न आ दि स हि ग या नाः गी

महामन्त्रसदयके रूपः ॥ पुनरुविधिसंपूर्णनग्रीआभाप्रपाञ्चदिसर्वदेवदेवतावाहनः यथाविधिपूजयत् ॥ गाव
दाक्षोपेचगधसूगधजलस्नानलेपयत् ॥ धूगुविधिसंपूर्णनग्रीआभाप्रपाञ्चदिसर्वदेवदेवता
आवाहनयाना यथाविधिथं पूजायाय ॥ प्राप्तां पंचगधेन स्नानयाय ॥ पंचैवर्णजलपविगस्त्रिगपूष्यनानापूष्यमाला
अभकपत्रमालाः कनकमाला मेहादिपदीपमाला माकाशदीपः ॥ जगत्पुकात्रयाजजकाः भगुगुस्नानः स्नानमात्राः अं
भकपत्रमात्राः सूवर्णमात्राः महादिपमात्रा चाकमगः आकाशमगः अयकावियः ॥ चपूना ॥ पूष्यंधूपदीपदलमूला
दिनानापुकात्रयापंचामृगादिः पायसश्रीवः अंभकपकानि नैवद्यसमर्पयत् ॥ गगनपञ्चपुकेमिषनलेभ्रग
यगत्पुकात्रपूजाकियाकर्मविधिसंपूर्णः अक्षगपुत्रामदन्ववगपुदरिभ्रजयनागसमाचयत् ॥ हनपूष्यंधूपदी
पद्वयमूत्रेच्छायः पंचामृगनंश्रीवनेः मधिनं चयः ॥ उगुवषगुत्रीपगुहनपंचामृगनंधयागुनयमगः ॥ धूगुपु
कात्रपूजाकियायानासंपूर्णधूनः हनं अक्षगपुत्रामयानाजपनागुसकत्रयानाया ॥ पूनर्वाद अक्षगपुत्रामकृ
मां ऊर्हिवधगुपापदेभनापूष्यनूमादना ॥ गगः हजगत्स्वामिजानं अजानः अपिलं हगियः पात्रागिपातः ॥

अदत्तादानः काममिच्छा चानुगत्यापन्ना चयत ॥ हनः आहंगपुत्रा मयानाभः विमियायाः पापदंशनायायः पूत्यन्
 भादनायायः उगुवषगुः हस्वामिअभाद्यपाभ्राक्कभ्राजः जिनेच्छुमसियाः जिगुसत्रियसः क्षातापापः ॥ मविकेका
 गुः कामपापगुः धूयिनाभयायमात्र ॥ यत्रकुसमनकर्मयत ॥ केवलपूल्यानूभादनकृयासमनसमाचयत ॥ उग
 त्रियाकर्मसमाफेनगित्तस्यभवन ॥ समनअस्मिदिने ॥ ब्रह्मधर्मसद्यः पत्रितजपयमूयवाभकर्मच्छात्रिग ॥
 त्रियगसयायमधूतः जिनेकर्मयाय ॥ केवल्याः पूल्यानूभादनाक्रियाजिनेयायरुच ॥ धूगुक्रियाकर्मसमा
 फयायधूनकाभः गित्तयाभवनअहजिने ॥ धनिसिः वृधनतः धर्मनतः सद्यततः भावताभः भवगुउपा
 भकर्मच्छूयायमधू ॥ गवणमियनिर्वानेयदसूपसंने ॥ गगः वाधिसिह्रत्पादः अतिगअनागगपुण्यत्यन्नग
 धगगः दानपात्रमितादिः दभपात्रमितापात्रयत ॥ वाधिसानसमावयनः गधगगपदव्यनजगत्ससावपात्र
 यननिर्वानेयदं ॥ उगुवषगुः कृतपात्रः स्वमस्यनेनिर्वानरुतविश्रुतः कृतपात्र ॥ उगुवषगुः वाधिसिह्र
 उत्पुगियाय ॥ अगीगअनागगपुण्यत्यन्नगधगगपनिसेने ॥ दानपात्रमिताआदि ॥ दभपात्रमिताआदि

मिः उ पा सं ची ना या पू न्ध रु ज ग थि गु वा य द पी ज म् ध साः थू गु पू न्ध या पु ला वं १०००
 दे वः आ र ०० शु ध य का ज न म रु गु ४॥ ग न ४ ज ह मा स्य सि गे प रु सू का ह मि दि न बु रु वा ज
 न दान रु तं य ए गु ॥ ह नं ज ह मा स या सू का ह मि उ पा सं ची ना या पू न्ध रु ज ग थि गु वा य
 ना या पु ला वं १२०० सा दान या ना गु या रु त द गु रु ज ॥ आ षा ठ गु का ह मि दि नं अ ह
 व न्ध ह सह सा न्ध सू व रू दान रु तं ॥ ह नः आ षा ठ मा स या सू का ह मि दि नं उ पा ज
 थि गु वा य द यि वा ध सा थू गु पू न्ध या पु ला वं ८००० ह व रू दान या ना गु या रु त द गु वा य ॥
 जा र स मा च यः उ ग त्पू न्ध पु ला व न गि न रु प व नू य ना दान रु तं ॥ अ व न मा स या सू का ह
 ना या पू न्ध रु ज ग थि गु वा य द यि वा ध सा थू गु पू न्ध या पु ला वं ३००००० अ ह दान या ना
 द गु वा य द यि वा ध सा थू गु पू न्ध या पु ला वं ३००००० अ ह दान या ना
 द गु वा य द यि वा ध सा थू गु पू न्ध या पु ला वं ३००००० अ ह दान या ना

रवन वासया ॥ एतदपदमासया सूत्राह मिउ पासे चो नाया रुतंग पिगु नाय दयिना धि साः थूगु पूव
नं ६००० १००० तु विगा र व न र न रु या वा स या य द यी यी ॥ आश्विन मास स्य बुग चुग म नि
सह सुा लं दान रु वं ॥ आश्विन मास या सूत्राह मि बुह उ पास ना चो ना य रुतंग पिगु ना य
थ या पु ला वं १००० न नीत दान या ना या रु व द गुरु ल ॥ ह नं । कार्त्तिक मास स्य बु रु
न्या नृ ल व न सह र्म गु न वां चि न न सह सु प न ना ग दान रु तं व ल प न ॥ ह नः कार्त्तिक
व रु उ पास ना यो ना गु पू व या रु ल ग पिगु ना य द यिना धि सा थूगु पू व या पु ला वं ३१
ना या रु त द गुरु व ॥ मार्ग शि व मा स्य गु क्रा ह मि दि नं बु रु क र्म ना ग पू न्यः रा सह सु दा
न मा स या सू क्रा ह मि दि नं उ पास चो ना या रु तं ग पिगु ना य द यिना धि सा थूगु पू व
ना ना या रु व द गुरु व ॥ पोष मास्य मि न प रु व रु जा र स मा व न ॥ ब ह्वि व व सह सा
२ अश्वि २ पूष २ स्ती प प यि ना य क द मा नि १ १ ग स क व ल प यि पू र्ण च व व